WEEKLY

14

- Edition No -

ट्रॉली टाइम्स

VOICE OF KISAN PROTEST 2020-21

SATURDAY, MARCH 20TH, 2021

ILLUSTRATION - JYOTHIDAS K V

किसान आंदोलनों का प्रकाश पुंज है मुजारा आंदोलन

पुरुषोत्तम शर्मा

पंजाब के मुजारा आंदोलन के बारे में बाक़ी देश या तो जानता ही नहीं है या बहुत ही कम जानता है। मैं इस लोकसभा चुनाव में कामरेड रुल्दूसिंह के साथ किसानों के बीच चुनाव प्रचार के लिए मानसा जिले के किशनगढ़ गांव भी गया था। वहाँ मैंने इस आन्दोलन की यादों को जिंदा रखे स्मारक को देखा तो मेरे अंदर इस आंदोलन को जानने की जिज्ञासा जागी। मुझे लगा अभी भी अपने पुरखों के क्रांतिकारी इतिहास के कई पन्नों से हममें से ज्यादातर लोग अनभिज्ञ हैं। तेलंगाना आन्दोलन के समय उसी तरह का आंदोलन पंजाब की धरती पर मुजारों (गरीब व भूमिहीन किसान) की संगठित ताकत के बल पर चल रहा था। पंजाब का मुजारा आन्दोलन पटियाला राज के अंदर अंग्रेजों से देश की आजादी और बड़े जागीरदारों के खिलाफ उन गरीब व भूमिहीन किसानों का संगठित आंदोलन था जो उनकी जमीनों पर कास्त करते थे। मानसा जिले के किशनगढ़ में आज भी मुजारा आंदोलन और उसके शहीदों की याद में एक भव्य स्मारक है। उस स्मारक की ऊंची लाल लाट के ऊपर मुजारों के प्रिय लाल झंडे को बनाया गया है, जिस पर कम्युनिस्टों का निशान हसिया हथोड़ा बना है। किशनगढ़ मुजारा आन्दोलन का सबसे बड़ा गढ था। इस पर पटियाला राज की सेना ने चारों और से घेर कर तोपों से हमला किया था। राजा की सेना का मुकाबला करने को किसानों के सशस्त्र जत्थे डेट थे। इस लड़ाई में इस गाँव के किसान योद्धा कुंडा सिंह और राम सिंह बाग़ी शहीद हुए थे। पूरे मालवा क्षेत्र में मुजारा आन्दोलन में संघर्षरत किसानों की हिफाजत के लिए लगभग 1100 किसान गुरिल्ले विभिन्न जत्थों में संगठित किए गए थे।

पंजाब के मुजारा आन्दोलन को देश के क्रांतिकारी किसान आंदोलनों की सूची में वह स्थान अब भी नहीं मिला है जिसका वह हकदार था। मुजारा आंदोलन की पृष्ठभूमि जानने के लिए हमें इतिहास में थोड़ा पीछे जाना होगा। 1885 के आस-पास पंजाब से लोग रोजगार के लिए बाहर के देशों में जाने लगे थे। पर इन मेहनती और स्वाभिमानी लोगों को वहां गुलाम देश के नागरिक के तौर पर लगातार अपमान का घूँट पीना पड़ता था। इस कारण उनके अंदर देश की आजादी की भावना ज्यादा हिलोरें मारने लगी। 1913 में अमेरिका और कनाडा में रहने वाले भारतीयों जिनमें ज्यादातर सिख थे ने “हिन्दी एसोसिएशन पेसिफिक पोस्ट” नाम का संगठन बनाया। इस संगठन ने 1857 के गदर से प्रेरणा लेकर देश में आजादी के लिए काम करने की योजना बनाई। क्रांतिकारी सोहन सिंह भागना इसके संस्थापक अध्यक्ष बनाए गए। क्रांतिकारी लाला हरदयाल को इस संगठन की ओर से ग़दर नाम का एक अखबार निकालने का जिम्मा दिया गया। इसी अखबार के नाम से बाद में इस संगठन को ग़दर पार्टी के नाम से जाना जाने लगा। देश में क्रांति संगठित करने लिए इस संगठन ने 1914 में 800 गदरी भारत भेजे। इनमें से ज्यादातर को गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में कई को फांसी की सजा दी गयी। इन क्रांतिकारियों जिन्हें अब हम गदरी बाबा के नाम से संबोधित करते हैं की बीर गाथाएं सभी क्रांतिकारियों के लिए आज भी प्रेरणा की श्रोत हैं।

1942 में ग़दर पार्टी का कम्युनिस्ट पार्टी में विलय हो गया। पर फिर 1946 में दो राष्ट्र के सवाल पर मतभेद के कारण इसका बड़ा हिस्सा अलग हो गया और लाल पार्टी का गठन किया। कामरेड तेजा सिंह स्वतंत्र इसके नेता थे। उन्होंने पंजाब के मालवा क्षेत्र को अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चुना, जहां बड़े जागीरदारों के खिलाफ मुजारों का आंदोलन संगठित हो रहा था। मशहूर क्रांतिकारी बूझा सिंह भी उनकी टीम में थे। लाल पार्टी के नेतृत्व में किशनगढ़ में जमीन पर कब्जे के संघर्ष में एक थानेदार की मौत हो जाने के बाद पटियाला राज की सेना ने किशनगढ़ को घेरा था और तोपों से उस पर हमला किया था। कम्युनिस्टों के नेतृत्व में मुजारों (गरीब व भूमिहीन किसानों) की बढ़ती ताकत से घबराए पटियाला के राजा को तत्कालीन भारत सरकार ने राज्य प्रमुख का स्थाई पद का लालच देकर भारत की संघीय यूनियन में शामिल कर लिया। तब इसका नाम “पटियाला एंड ईस्ट पंजाब स्टेट्स यूनियन”

(पेप्सू) था। राज्यपाल की जगह राजा पटियाला राज्य प्रमुख था। पर बाद में भारत सरकार ने 1956 में पेप्सू का पंजाब में विलय कर दिया और पटियाला के राजा को दिया राज्य प्रमुख का पद ख़त्म कर दिया। आज जब पूरे इतिहास को ही बदल देने के दक्षिणपंथी प्रयासों को परवान चढ़ाया जा रहा है। ऐसे समय में पंजाब के मुजारा आन्दोलन के बारे में भी बाक़ी देश के लोगों को और खुद पंजाब की नई पीढी को जानने की जरूरत है।

मुजारा आंदोलन के एक कार्यकर्ता कामरेड कृपाल सिंह बीर अब भी जीवित और सक्रिय हैं। पंजाब के मानसा जिले के बीर खुर्द (छोटी बीर) गाँव के निवासी हैं जिनकी उम्र 91 वर्ष है। वे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माले) के वरिष्ठ नेता हैं। कभी पार्टी के जिला सचिव की भी भूमिका भी निभाई है और आज भी पूरी तरह से किसान आन्दोलन में सक्रिय हैं। चुनाव के दौरान 15 मई को पार्टी कार्यालय में इनसे मुलाक़ात हुई। 16 मई को अपने गाँव में चुनावी सभा करने के लिए नेताओं से समय लेने पहुंचे थे। उनका गांव भीखी कसबे से 7 किमी दूर और मानसा जिला मुख्यालय से 23 किमी दूर है। पार्टी जिला कार्यालय मानसा में अक्सर आते हैं। अभी भी गांव से 7 किलोमीटर साइकिल चलाकर भीखी पहुँचते हैं। वहां से बस से मानसा वापसी में फिर भीखी से 7 किलोमीटर साइकिल चला कर अपने घर पहुंचते हैं। यानी एक दिन में 14 किलोमीटर साइकिल अब भी चलाते हैं। अभी कुछ साल पहले तक वे मानसा भी साइकिल से ही आते थे। यानी एक दिन में 46 किलोमीटर साईकिल चालाते थे।

इनका जन्म नवम्बर 1928 में बर्मा में हुआ था पिता वहीँ नौकरी करते थे। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान 1942 में इन्हें पिता के साथ वर्मा से पैदल भाग कर भारत आना पड़ा। स्कूली पढ़ाई कक्षा 3 तक रही। जब पंजाब पहुंचे तो उन दिनों यहाँ बड़े जागीरदारों के खिलाफ लाल पार्टी के नेतृत्व में मुजारों का आंदोलन चल रहा था। इस आन्दोलन का नेतृत्व ग़दर आन्दोलन से जुड़े कम्युनिस्ट कर रहे थे। उन्होंने ही लाल पार्टी का गठन किया था जिसका झंडा लाल और उसपर निशान हसिया हथोड़ा था। युवा होता हुआ कृपाल सिंह बीर भी 1944 में इस आंदोलन में सक्रिय हो गए। 1949 में उन्होंने लाल पार्टी की सदस्यता ली। यह वह दौर था जब पंजाब का मुजारा आन्दोलन और उसका दमन अपने चरम पर था। मुजारों ने पूरे पंजाब में जागीरदारों की लाखों एकड़ जमीनों पर कब्जा कर लिया था। पटियाला राज की सेना के साथ मुजारों की झड़पें हो रही थी। 1948 तक मुजारों को जमींदारों के अत्याचारों से बचाने के लिए 30– 40 की संख्या वाले सशस्त्र किसानों के कई जत्थे गठित किए गऐ। इन जत्थों में लगभग 1100 सशस्त्र किसानों की गोलबंदी हो चुकी थी।

51-52 में यहाँ राष्ट्रपति शासन के दौरान भारी सरकारी दमन के आगे 48 से 51 के बीच जमीनों पर काबिज गैर मौरूसी काश्तकार अपना कब्जा बरकरार नहीं रख सके। जबकि दखली काश्तकार अपना कब्जा बरकरार रखने में कामयाब रहे। पहले विधानसभा चुनाव में मुजारा आंदोलन की लाल पार्टी के चार विधायक चुनाव जीत गए। विधानसभा त्रिशंकु आयी। उसके बाद मुजारों को जमीन का मालिकाना हक देने की शर्त पर लाल पार्टी ने ज्ञान सिंह राड़ेवाल की सरकार को समर्थन दिया। इसी के दबाव में 1953 में किसानों की बेदखली रोकने व सुरक्षा प्रदान करने के लिए पेप्सू कृषक अधिनियम पारित किया गया। इसी वर्ष पेप्सू भूमि अधिग्रहण कानून बनाया गया और किसानों को जमीन का मालिकाना दे दिया गया। 1948 से 52 तक चले जबरदस्त मुजारा आन्दोलन में 884 गावों की 18 लाख एकड़ जमीन को बाँट कर मुजारों (गैर मौरूसी व दाखली काश्तकारों) को उस दखल जमीन का मालिकाना हक दिया गया।

मुजारा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण कामरेड कृपाल सिंह बीर 52 में हुए पहले पंचायती चुनाव में बीर बेहपई गाँव के पहले सरपंच (ग्राम प्रधान /मुखिया) चुने गए। अब इस गाँव की दो पंचायतें हो चुकी हैं। बाद में लाल पार्टी ने सीपीआई में विलय कर दिया। 84 में पार्टी लाइन से मतभेदों के कारण वे सीपीएम और फिर 94 में भाकपा (माले) में शामिल हो गए। अखिल भारतीय किसान महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कामरेड रुलदू सिंह के साथ कामरेड कृपाल सिंह बीर सन् 2016 में लगातार 11 महीने और अभी सन् 2019 में लगातार तीन महीने किसानों की कर्ज माफी की मांग पर मानसा जिला मुख्यालय पर धरने में बैठे रहे। पढ़ने लिखने का बड़ा शौक है। इनके घर में (गाँव में) इन्होंने 2000 किताबों की एक लाइब्रेरी बनाई है। कुछ लिखा भी है और कुछ लिखवाया भी है। गाँव में मजदूरों किसानों के बच्चों को वे साहित्य पढ़ने को प्रेरित करते रहते हैं। आज उनकी लाइब्रेरी की देखभाल भी ऐसे भी नई पीढी के बच्चे करने लगे हैं। 19 मार्च को, संयुक्त किसान मोर्चा ने मुजारा आंदोलन के शहीदों के परिवार को सम्मानित करने का आयोजन तय किया हैं,

इसी सिलसिले में सैंकड़ो परिवार टिकरी बॉर्डर मोर्चा पर पहुँच चुके हैं।

भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव की शहादत और किसान आंदोलन

प्रसेनजीत कुमार

23 मार्च, एक ऐतिहासिक दिन जब ब्रिटिश कंपनी राज के खिलाफ चल रहे आज़ादी आंदोलन को क्रांतिकारी दिशा देने वाले भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तीन ऊर्जावान क्रांतिकारी आवाज़ों को फांसी के द्वारा खामोश करने की कोशिश हुई थी। लेकिन उस दौर में भी भगत सिंह ने जो क्रांतिकारी दिशा पूरे आजादी आंदोलन को दी उसको ब्रिटिश राज खामोश करने में असफल हुआ और भारत से उसे जाना पड़ा था।

भगत सिंह आजादी आंदोलन का एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जिनकी ऊर्जा आजादी आंदोलन में ही खत्म नहीं हुई। आजादी के बाद भी एक समाजवादी समाज बनाने व आजादी का आभास समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए चल रहे देश के तमाम छात्र-युवा, महिला, किसान, मजदूर आंदोलनों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। आगे भी बने रहेंगे।

भगत सिंह बस एक उत्साहित, ऊर्जावान युवा मात्र ही नहीं थे जो अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए शहीद हो गए, वो एक विचार थे जो अपने दशक की सबसे बड़ी वैश्विक परिघटना रूसी क्रांति की तासीर को महसूस कर रहे थे और उस से प्रभावित हो रहे थे। जो मार्क्स, लेनिन से लेकर तमाम आधुनिक, वैज्ञानिक समाज के अग्रदूत विचारकों को पढ़ रहे थे तथा भारतीय संदर्भ में उसको सहेजने की कोशिश कर रहे थे। साथ ही भारतीय आजादी तथा उसके बाद के भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिवर्तन के कार्यभार में छात्र युवाओं की बड़ी भूमिका निभाने की जिम्मेदारी लेने की बात कर रहे थे। वे उस दौर में भी अपने लेख ‘विद्यार्थी और राजनीति’ में इस बात पर जोर दिया कि सचमुच विद्यार्थियों का काम पूरे मन से ज्ञान अर्जित करना है लेकिन शिक्षा सिर्फ क्लर्की करने के लिए ही नही होनी चाहिए बल्कि उस शिक्षा में सामाजिक, आर्थिक, राजनीति परिवर्तन का ज्ञान और जब जरूरी लगे उसमें हस्तक्षेप करने की जिम्मेदारी भी शामिल होनी चाहिए।

आज जब हम भगत सिंह राजगुरु सुखदेव की शहादत दिवस मनाने जा रहे हैं तब देश में लगभग चार महीने से भी ज्यादा दिनों से खुले आसमान के नीचे भीषण ठंढ को झेलते हुए और अब कड़कड़ाती धूप में लाखों की संख्या में किसान दिल्ली के विभिन्न बोडरों पर अपने वाजिब मांगों को लेकर आंदोलन चला रहे हैं। उनकी प्रमुख मांग है कि तीनों कृषि बिल वापस हो और फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की गारंटी हो। लेकिन मोदी सरकार पूरी तरह से अम्बानी - अडानी के पक्ष में कानून बना कर आजाद भारत में दूसरी कंपनी राज को थोप देना चाहती हैं। एक समय था जब ऐसे ही कंपनी राज को भगत सिंह जैसे नवजवानों और तेलंगाना के किसानों ने हराया था। आज का समय परिवर्तन का समय है और ऐसी घड़ी पर परिवर्तन के शहीदों को याद करना उनको ज़िंदा रखने के समान है। 1931 में जब लेनिन दिवस पर भगत सिंह और उनके साथी साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ लड़ रहे हर इंसान को सलाम पेश कर रहे थे। आज किसान आंदोलन को देखकर लगता है कि भगत सिंह हमारे वक़्त को सलाम कर रहे होंगे।

किसान आंदोलन ने 23 मार्च के दिन को युवा दिवस के रूप में मनाने और आंदोलन में युवाओं को भागीदारी की अपील की है यह सचमुच उत्साहजनक हैं जिससे हम सभी छात्र - युवाओं को बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। मोदी सरकार के इस फासीवादी नीतियों के खिलाफ़ किसान आंदोलन में शामिल होते हुए तथा उससे प्रेरणा लेते हुए शिक्षा रोजगार के संस्थानों को भी जिस तरह से निजी कंपनियों,पूंजीपतियों के हवाले कर देना चाहती हैं उसके खिलाफ आंदोलन खड़े करने की जरूरत है, नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से आम छात्र युवाओं को शिक्षा से दूर करने और शिक्षा को बाजार की वस्तु बना देने के खिलाफ खड़े होने और रेलवे से लेकर तमान सरकारी और संम्मानजनक रोजगार के संस्थानों में निजी हस्तक्षेप के जरिये रोजगार के अवसर को खत्म कर देने के खिलाफ़ खड़े होने की जरूरत है।

इस कोरोना आपदा के दौर में फासीवादी मोदी सरकार के खिलाफ़ किसानो, मजदूरों, महिलाओं के आंदोलनों के साथ खड़ा होते हुए शिक्षा - रोजगार की गारंटी के लिय व्यापक छात्र-युवा आंदोलन खड़ा करने के संकल्प लेना ही भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव की शहादत दिवस मनाने और उनको सच्ची श्रद्धांजलि देना होगा।

सम्पादकीय

तो क्या अब किसान आंदोलन कमजोर पड़ रहा है?, क्या किसान घरों को वापिस लौट रहे हैं?, आपको क्या लगता है कि आप कब तक मोर्चों पर बैठे रहेंगे?, क्या आपको लगता है कि किसानों की जीत होगी? ये सवाल आज कल आप में से कईयों ने सुने होंगे। किसी को किसी पत्रकार ने पूछा होगा या किसी सज्जन-दोस्त ने या शायद विदेश में बैठे किसी रिश्तेदार ने। खैर इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता कि पूछने वाला कौन है, पर जरूरी बात यह है कि इन सवालों के ईमानदार जवाब क्या है।

ये तो सच है कि सारे मोर्चों के ऊपर लोगों की तादाद कुछ कम हुई है। पर गिनती कम होने का मतलब आंदोलन का कमजोर पड़ना नहीं होता। हमें पता है कि हमारी लड़ाई लंबी है और लंबी लड़ाईयां हमेशा धीरज और योजना से ही जीती जाती हैं। वापिस गांवों में जा के फसल को कटाई, बिजाई करके एक और मौसम के लिए पूरी तैयारी से लौटना भी उसी का हिस्सा है। अलग अलग राज्यों में जाकर सभाएं आयोजित करना, चुनाव प्रचार में देश की जनता से बीजेपी को वोट न देने का अपील करना भी उसी योजना का हिस्सा है। पिछले दिनों बंगाल में #NoVoteToBJP के बैनर तले बड़ी सभा हुई, जिसमें संयुक्त किसान मोर्चा के नेताओं ने भी हिस्सा लिए। इन सभाओं में उमड़ती हजारों की भीड़ किसान आंदोलन के और तीव्र होने की निशानी ही तो है। दूसरी तरफ मोर्चे पर डटे लोग ट्रालियों से तिरपाल उतार करके बांस के घर बनाने में लगे हैं, ताकि जिस दृढ़ता के साथ हमने सर्दी का सामना किए उसी दृढ़ता के साथ अब गर्मी का भी कर पाएं। कईयों ने तो गोदी मीडिया के झूठे प्रचार, कि किसान वापस लौट रहे हैं, के जवाब में पक्के घर भी बना दिए ताकि इस सरकार को कान हो जाएं कि अबकी बार इस किसान आंदोलन को उठाना उसके बस की बात नहीं। किसानों ने गर्मी की तैयारियां करके अपनी तरफ से फिर एक बार सबको बता दिया कि हम तब तक जाने वाले नहीं जब तक सरकार तीनों खेती कानून वापिस नहीं लेती। मीडिया को जवाब देने की बारी अब सरकार की है कि किसान आंदोलन कब तक चलेगा।

रही बात जीत की तो हम पिछले साढ़े तीन महीनों में भी बहुत सारी जीत हासिल कर चुके हैं। किसान आंदोलन ने पूरे देश की आम जनता को फिर से अपने हकों के लिए लड़ना सिखा दिया है। सरकार के नफरत और सांप्रदायिकता के एजेंडे के ऊपर किसानों ने प्यार और भाईचारे की जीत हासिल की है। मगर हमें ये भी याद रखना होगा की जीत के साथ साथ हमारे सामने भविष्य की लड़ाईयां भी आ कर खड़ी होने लगी हैं। रेलवे, हवाई जहाज, बीमा, कृषि के साथ-साथ सरकार अब सार्वजनिक बैंकों के निजीकरण का खेल भी खेल रही है। निजीकरण की प्रक्रिया हमारे रोजगार के अवसरों व सामाजिक सुरक्षा पर एक बड़ा हमला है। देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सार्वजनिक बैंकों के निजीकरण से किसानों, छात्र-नौजवानों, गरीबों को मिलने वाले सारे कर्जे बंद हो जाएंगे और वे निजी मालिकों के अधीन हो जाएंगे। निजीकरण की प्रक्रिया पर रोक लगाने तथा सार्वजनिक संस्थाओं के तंत्र को और भी चुस्त-दुरुस्त करने की मांग को लेकर भी हमें लड़ाई लड़नी होगी।

आंदोलन की अहमियत पढ़ाई-काम से बहुत बड़ी है!

मल्लिका, टिकरी बॉर्डर

दोपहर के सूरज का सफेद प्रकाश उसके चश्मे के पीछे उसकी आंखों को छुपा रहा था। मैंने उससे एक फोटोग्राफर के रूप में पूछा यदि वह कैमरे के लिए चश्मा हटाना पसंद करेगी। उन्नीस वर्षीय कमल मुस्कुराती हुई अनिच्छा से कहती है "वो तो मेरी पहचान है ना"। उसने कुछ देर पहले किसान मजदूर एकता के लिए किसी भी जाति-वर्ग आधारित भेदभाव पर विचार करने से इनकार किया है, यह उसके साफ़ नज़रिए को दर्शाता है जिसके साथ वह पहचान जानने की कोशिश कर रही है जो, उसकी उम्र की लड़कियों को अमूमन करना पड़ता है। पिछले तीन महीने से दिल्ली के टिकरी बॉर्डर पर डेरा डाले तीन कृषि कानूनों का विरोध करते हुए यह सब करना, उसकी यात्रा को एक अदभूत पड़ाव में ले जाता है। वह पंजाब स्टूडेंट यूनियन (पीएसयू) की सदस्य सुखप्रीत कौर (22) और हरवीर कौर (22) के साथ उन कुछ युवतियों में से है, जिन्होंने 27 नवंबर को वहाँ पहुँचने के बाद से टिकरी बॉर्डर मोर्चा में लगातार डेरा जमा रखा है। कमल और सुखप्रीत केवल एक बार ही वापिस गईं हैं, वह भी घर जाने के लिए नहीं बल्कि 26 जनवरी की ट्रैक्टर रैली के लिए पंजाब में झंडे सिलवाने के लिए। हरवीर पहले कुछ दफ़ा अपने बीएससी की परीक्षा देने के लिए घर गईं थी और फ़िर हरियाणा पुलिस द्वारा उसकी बहन, श्रमिक एक्टिविस्ट नोदीप कौर के ग़ैरकानूनी गिरफ़्तारी होने पर।

कमल, छह महीने से अधिक समय से घर नहीं गई है। जब से जून में कृषि कानून लागू किए गए और पंजाब में आंदोलन शुरू हुआ था, वह तब से इसमें शामिल है। उसके सेल्समैन पिता और गृहिणी माँ ने, जत्थों के साथ लम्बा समय देने पर आपत्ति जताई और उसे रोकने की कोशिश भी की। कमल अपना मोबाइल लिए बिना ही निकल गई और तब से उसे संगठन का समर्थन मिल रहा है। "यदि आप लोगों की भलाई के लिए काम करते हैं, तो लोग आपकी देखभाल करेंगे।" वह आश्वासन से कहती है कि अपने घर से आने के बाद से ऐसा कुछ भी नहीं नहीं है जिसकी उसे कमी महसूस हुई हो। इसके विपरीत, विरोध प्रदर्शनों में एकजुट हुए समुदायों की मदद से उसे सक्रिय रूप से अपने आप में सक्षम होने का मौका मिला है। इस विरोध प्रदर्शन के बढ़ने और इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिलने पर अब उसके माता-पिता भी यह स्वीकारने लगे हैं वह वास्तव में अच्छा काम कर रही है। उसके परिवार में कोई भी ज़मीन या खेतों का मालिक नहीं है, इसलिए वह इस आंदोलन के साथ जुड़ कर सभी प्रयासों से अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को कैसे पूरा कर रहा है? वह बड़ी तस्वीर देखना पसंद करती है। यह लड़ाई, जैसा कि वह देखती है, केवल तीन कानूनों के खिलाफ नहीं है, बल्कि बढ़ते निगमीकरण और भाजपा के फासीवादी शासन के खिलाफ है। कमल, जो पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से राजनीतिक इतिहास में बीए० कर रही है, कहती है कि यह आंदोलन सामाजिक-राजनीतिक सच्चाई को जानने और नेतृत्व एवं संगठनात्मक कौशलता सीखने की बेहतरीन जगह है।

सुखप्रीत (22), अर्थशास्त्र में एम०ए० कर रही है और मेट्रो पिलर नंबर 775 के नीचे अपने टेंट में से ऑनलाइन परीक्षा दे रही है। पिलर 775 के तहत आने वाले पूरे कीर्ति किसान संघ की देखरेख अभी भी उनके दिन का ज्यादातर समय ले लेती है, लेकिन लड़कियां ज़ोर देते कहती हैं कि पुरुष भी उनकी मदद करते हैं। जैसे ही सुखप्रीत को, जिसे कमल "नेता" कहती है, कुछ खाली समय मिलता है, वह टिकरी मुख्य मंच के लिए अगले चरण की योजना बनाना शुरु कर देती है। जिस दिन मैं उससे पहली बार मिला, उसने किसानों के समर्थन में निकली महिलाओं पर भाजपा-आरएसएस की ट्रोल-आर्मी द्वारा विशेष रूप से लिंगभेदी टिप्पणियों के विरोध में पूरे शिविर में एक छोटे से मार्च का आयोजन किया था। उसकी अगली कार्यसूची में "महिला सप्ताह" कार्यक्रम है जो 8 मार्च को महिला दिवस तक जाता है।

हरवीर, जिसने हाल ही में फरीदकोट में बीएससी की अपनी अंतिम परीक्षा दी है, अनुभवी कार्यकर्ताओं के परिवार से आती है। इन सभी युवतियों के परिवारों को जो डर सताता है वह पिछले कुछ हफ्तों में हरवीर के परिवार के लिए पहले ही पूरा हो चुका है। उसकी बड़ी बहन नोदीप कौर को एक महीने तक ग़ैर-कानूनी गिरफ्तारी और हिरासत में हिंसा का सामना करना पड़ा है। अब नोदीप को जमानत मिल गई है। उसके माता-पिता हरवीर को घर लौटने और पुलिस प्रताड़ना से बचने के लिए बार-बार दलील दे रहे हैं। लेकिन हरवीर इसके बावजूद मजबूती से खड़ी है। "यह पहली बार नहीं है जब हम पुलिस के इस व्यवहार को देख रहे हैं। हमने अतीत में पंजाब में लाठीचार्ज का सामना किया है। इसलिए, हमें आश्चर्य नहीं हुआ। हम उसके खिलाफ लगाए गए आरोपों से आश्चर्यचकित थे।" वह नोदीप के खिलाफ हथियारों के कब्जे के बेतुके आरोप और हत्या के प्रयास के आरोप के बारे में कहती है। नोदीप, मजदूरों के वेतन के मुद्दों के लिए लड़ रही थी। "लेकिन हम भाजपा सरकार से और कुछ उम्मीद करते भी नहीं हैं।" हरवीर मुस्कुराते हुए कहती है। उसे विरोध स्थल से अपनी विज्ञान व्यावहारिक परीक्षाओं के लिए जाना पड़ता है लेकिन वह विरोध प्रदर्शन के साथ अपनी पढ़ाई को संतुलित करने की कोशिश कर रही है। वह विरोध को वर्तमान शासन से संभावित ख़तरे को देखते हुए पढ़ाई से अधिक महत्वपूर्ण समझती है। "यदि यह आंदोलन विफल हो जाता है, तो कोई भी कभी भी सरकार के खिलाफ़ होंसला बढ़ाने में सक्षम नहीं होगा।"

पाश: जो कभी विदा नहीं लेगा....

कपिल शर्मा, दिल्ली

ILLUSTRATION - JYOTHIDAS K V

जिन्होनें उम्र भर तलवार का गीत गाया है
उनके शब्द लहू के होते हैं
लहू लोहे का होता है
जो मौत के किनारे जीते हैं
उनकी मौत से जिंदगी का सफर शुरु होता है
जिनका लहू और पसीना मिट्टी में गिर जाता है
वे मिट्टी में दब कर उग आते हैं....

लहू और लोहे की ये अनवरत गाथा उठती है, चलती है, गिरती है, संभलती है और फिर उठ कर चलने के लिए तैयार होती है, लेकिन लोहे का स्वाद कौन जानता है, वो जिसने लोहा बरता है, लोहा खाया है, लोहा जिया है। लेकिन लोहे का स्वाद जानने वालों को पता होता है कि सवाल पूछना कितना बड़ा अपराध है, या हो सकता है। इंसानियत के दोस्त सवाल पूछते हुए ये नहीं सोचते कि सवालों की कीमत क्या हो सकती है, जवाबों के लिए क्या कुर्बान करना होगा...
क्या ये सच नहीं है कि सपने देखने के लिए जिगर में जज्बा होना जरूरी है, क्योंकि सपने हर किसी को नहीं आते...लोग अक्सरहां पूछते हैं कि आखिर राष्ट्रद्रोह में कौन किससे द्रोह करता है, कि सत्ता को अपनी रक्षा के लिए बार-बार टॉर्चर का, जेल का, नरसंहार का सहारा क्यों लेना पड़ता है, कि आखिर लोगों को सपने देखने के लिए उकसाने की सजा मौत क्यों होती है? वो कब पैदा हुआ, कहां पैदा हुआ, कब मरा, किसने उसे मार दिया, ये सारे सवाल बेमानी हैं। जो मानीखेज़ बात है वो ये कि उसने किसकी बात की, किससे बात की, और किससे सवाल पूछे। मानीखेज़ बात ये है कि उसने नज़रे नहीं झुकाई, उसने समझौता नहीं किया, उसने हमेशा आंखों में आंखें डालकर बात की। मानीखेज बात ये है कि उसने सवाल किए, उसने सबको सवाल पूछने के लिए उकसाया, उसने खुद खुदा से, सूरज से, सारे जहान् से सवाल किए। अपनी कविता की खूबसूरती उसे खेत की धूल में दिखती थी, हाथों में पड़े घट्टों ने उसके लफ्ज़ों को आकार दिया था, उसने खेतों की फसलों को अपना माना था लेकिन खेतों की धूल से अपने कहे को सजाया था, हां उसने प्यार किया था...

प्यार करना बहुत ही सहज है
जैसे कि जुल्म को झेलते हुए
खुद को लड़ाई के लिए तैयार करना
या गुप्तवास में लगी गोली से
किसी गुफा में पड़े रहकर
जख्म भरने के दिन की कोई कल्पना करे
प्यार करना
और लड़ सकना....

वो प्यार नहीं कर सकते, जो जीने के लिए लड़ाई नहीं करते, प्यार करने के लिए जुल्म झेलते हुए लड़ने की तैयारी लाजिमी है, प्यार करने के लिए वफा की नजरों का होना लाजिमी है, और सबसे ज़रूरी ये कि प्यार करने के लिए तमाम अहसासों से परे प्यार करने की हिम्मत का होना लाजिमी है। प्यार करना और जीना उन्हें कभी नहीं आएगा, जिन्हें जिन्दगी ने बनिया बना दिया है। कत्ल के साये में प्यार के गीत गाने की अपनी जिद के आगे उसने कुछ नहीं देखा, उसके लफ्ज़ों ने हर दिल को जिंदगी के टुकड़े चुनना सिखाया है, उसके हर दांव के आगे सत्ता लड़खड़ाई है। अपना सब कुछ दांव पर लगाकर महीनों से दिल्ली की सीमा पर डेरा डाले किसानों से वो पूछते हैं कि कब तक धरना दोगे, कब तक लड़ोगे? पर ये जवाब तो बहुत पहले दिया जा चुका है,

हम लड़ेंगे तब तक
जब तक वीरू बकरिहा
बकरियों का पेशाब पीता है
खिले हुए सरसों के फूल को
जब तक बोने वाले खुद नहीं सूंघते
कि सूजी आंखों वाली
गांव की अध्यापिका का पति जब तक
युद्ध से लौट नहीं आता.....
हम लड़ेंगे तक तक
जब तक दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाकी है

हम उसी भारत के बेटे हैं, जिनके पैरों में घट्टे पड़े हों तो भी वो नंगे पैर गांव के मेलों की ओर दौड़ जाते हैं, पूरे दिन झुलसती गर्मी में धरती से सोना निकालने की कवायद करते हैं, और फिर अपने लहू को बिना किसी दाम के बनियों के गोदामों में कैद करने के लिए छोड़ने को मजबूर होते हैं। वो भारत जो हमारे सम्मान का सबसे महान शब्द है, वो भारत जिसके अर्थ खेतों के बेटों में मिलते हैं, वो भारत जो वहां मिलता है जहां अन्न उगता है, जहां सेंध लगती है...

उन्हे डर लगता है, और इसी डर के चलते वो सब कुछ करने को तैयार हैं जो इंसानियत को शर्मसार करता है, यही डर है जो उन्हे हमारे ही बेटे-बेटियों को, भाई-बहनों को हमी पर लाठियां भांजने और गोलियां चलाने के लिए मजबूर करता है, यही डर है जो हमारे ही हाथों में बंदूक देकर, अपनी रक्षा करने के लिए मजबूर करता है, यही डर है जो हमारे गांवों में, हमारे खेतों में आग लगाने की कवायद करवाता है। वो हमारे घरों, खेतों को ही नहीं, हमारे सपनों को, हमारी उम्मीदों को, हमारे भविष्य को भी जला देने की कोशिश कर रहे हैं। वो हमारे जज़्बातों को कुचल देना चाहते हैं। जब वो हमारे तरफ इशारा करके भद्दे अल्फाज बोलते हैं, जब वो हमारा मजाक उड़ाने की कोशिश करते हैं, जब वो हमे देशद्रोही बताने लगते हैं, तब समझना साथी कि हम जीत रहे हैं, तब ये जान लेना साथी कि उनका डर उनके सिर से उतर कर उनकी छाती में समा गया है, उनके दिलों को इस डर ने जकड़ लिया है, उनके खून में तुम्हारी एक-एक बोली का डर समा गया है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आज वो हमें मार सकते हैं, वो हमें जला कर राख कर सकते हैं, क्योंकि याद रखना....

मैं घास हूँ
मैं तुम्हारे हर किए-धरे पर उग आऊँगा....

हम घास हैं, हम पाष हैं,
तुम्हारे हर किए धरे पर उग आएंगे.....

किसान मोर्चा मीटिंग में छात्र का अनुभव

अभिज्ञान

छात्र कई बार इस गलतफहमी में रहते है की विचारधारा, आधार और राजनीतिक ताकत के रूप में सिर्फ छात्र राजनीति में ही बाक़ी रही है। जमीनी राजनीति से अनवरत निराशा का भाव पर तो सवाल उठता है जब जन आंदोलनों की समितियों की मीटिंग में क्रांतिकारी बदलावों पर हो रही चर्चाओं को आप सुनते है। आपकी यह गलतफहमी, और उनकी ग़ैर ज़रूरी प्रदर्शन करने की आदत पर आप ठिठककर सोचते है। संयुक्त किसान मोर्चा, जो संभवतः कॉरपोरेट हिंदुत्व फासीवादी सरकार के खिलाफ सबसे बड़े और कारगर आंदोलन का नेतृत्व कर रही है, ने मेरी ऐसी ही गलतफहमियों को दुरुस्त किया।

जब हम सिंघु मोर्चे पर बमुश्किल पहुँचे, वहाँ मंच किसान संगठनों, लाल तमग़ें लगाए मजदूर संगठनों, महिला संगठनों, टीचर, छात्र और युवा संगठनों के सैंकड़ों लोग बैठे थे। सभा शुरू हो चुकी थी और "भारत बंद' के आह्वान को सफल बनाने के लिए योजना पर बात हो रही थी। जैसे कि माना जाता है कि साम्राज्यवाद को सबसे बड़ा दुश्मन मानने की बात कहीं अकादमिक जगत में खोकर रह गई है। सभा के पहले ही वक्ता ने कृषि कानूनों के मूल में वर्तमान मोदी सरकार को ही नहीं, बल्कि परे जाकर 1991 के जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड और टैरिफ को जिम्मेदार बताया। ट्रेड यूनियन से सम्बद्ध अगले वक्ता ने कहा की किस तरह लॉकडाउन के दौरान श्रम कानून में हुए बदलावों की वजह से जनतंत्र और समाजवाद की लड़ाई कितनी पिछड़ गई जबकि इस बदलाव के ख़िलाफ़ तो एक जैन आंदोआँ खड़ा हो जाना चाहिए था। आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के सवाल को महिला संगठनों ने उठाया जिसे मोर्चे के नेताओं ने माना अपनी कमी के तौर पर माना।

विभिन्न मुद्दों के बीच बात करते हुए इस बात पर सहमति बनी कि संघर्ष कृषि क़ानूनों से काफ़ी बड़ा है। किसान नेताओं ने भी बैंकों और सार्वजनिक कंपनियों के निजीकरण, नई शिक्षा नीति के खिलाफ बोला। इस बात पर भी एकराय बनी की ना सिर्फ़ भाजपा बल्कि अन्य दल भी जो पूँजीवादी व्यवस्था के एजेंट के रूप में काम कर रहे है, उन सबको नकारकर भारत को क्रोनी पूंजीवाद के चंगुल से बचाना हमार अंतिम लक्ष्य है। जब मैं मंच पर ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) की तरफ से बोलने गया तो मैं अवाक रह गया। मुझे नहीं समझ आया कि जिन लोगों ने एक पूरी पीढ़ी को के दिखाया है कि आंदोलन कैसे किया जाता है, उनसे मैं क्या बोलूं? बस मैं अपनी तरफ से आंदोलन के प्रति एकजुटता दिखाकर यही बोल पाया कि जब तक वो सीमाओं पर आंदोलन लड़ रहे हैं, दिल्ली के छात्र, अध्यापक, मजदूर और सभी नागरिक उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहेंगे।

.

संयुक्त किसान मोर्चा ने एक नफरत और कारपोरेट लूट के खिलाफ धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और संविधान सम्मत लोगों का एक मोर्चा खड़ा किया है। जब आप ऐसे लोगों को एक साथ देखते है जो, आंदोलन के बिना शायद ही कभी एक मंच पर साथ आए, तो आपको एक उम्मीद बंधती है। आप देखते है कि एक बुजुर्ग पगड़ीधारी अपना खाना बीकानेर से आए किसी साथी के साथ बाँटता है, अनजान लोग एक-दूसरे से ऐसे खाना-पानी बाँटते है जैसे बरसों का याराना हो। इससे देश-समाज जिंदा महसूस होता है। एक बस में बैठे सैकड़ों लोगों में कुछ भी उन्हें एक-दूसरे से नहीं जोड़ता। वे सब अपने दुख-सुख और संघर्ष में जीते है। लेकिन वो साथ उन्हें जोड़ता है। इसी तरह संयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन एक बस की तरह है, जो हरेक देशवासी को इस तरह जोड़ता है, जिसका भान भी हमें शायद ना हो। यह हमें नफरत गर्दी से एकता की और ले जा रहा है।

गाजीपुर में गर्मी की तैयारी

हरशरणजीत कौर, गाजीपुर बॉर्डर

100 से अधिक दिन और उनके पीछे 300 मौतें, किसान की धैर्य, दृढ़ संकल्प और संकल्प से अचंभित हैं। फसल कटाई का मौसम चल रहा है और किसान सावधानी के साथ फसल कटाई की योजना बना रहे हैं। गाजीपुर मोर्चा में प्रबंधन समिति ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और अन्य राज्यों के प्रत्येक गाँव की भागीदारी के लिए एक रोस्टर बनाया है। यह किसानों को पारी के आधार पर आंदोलन में भाग लेने में सक्षम बनाता है और साथ ही समय पर कटाई सुनिश्चित करता है। दिल्ली के गर्म मौसम का मुकाबला करने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारी चल रही है। ठंडक के लिए पुरानी प्लास्टिक शीटों को बदलने के लिए पुआल की छतों के साथ ऊँचे छप्पर लगाए गए हैं। इन टेंटों को हवादार बनाने के लिए जाली की खिड़कियाँ बनाई गई हैं और पंखे और कूलर भी लगाए गए हैं। बुजुर्ग किसानों की सुविधा के लिए ट्रॉली में एसी लगाए गए हैं। इलेक्ट्रिकल गैजेट्स चलाने के लिए सोलर पैनल और जनरेटर सेट भी लगाए गए हैं।

चूंकि यह मोर्चा दिल्ली की सीमा पर सबसे बड़े कूड़े के ढेर के बगल में स्थित है, इसलिए किसानों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए विशेष सावधानी बरती जा रही है। मच्छरों और मक्खियों से सुरक्षा के लिए जाल वितरित किए जाते हैं। निर्बाध स्वच्छ पेयजल आपूर्ति के लिए धरना स्थल पर एक विशाल आरओ सिस्टम लगाया गया है। भोजन को स्टोर करने और उसे ताजा रखने के लिए डीप फ्रीज़र्स को लैंगर में लाया जाता है। प्रदर्शनकारी किसानों की दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिक उपयोगिताओं के भंडार सामने आए हैं। किसान के कारण सहानुभूति रखने वाले दिल्ली के नागरिक से भी मदद मिल रही है। वे दैनिक उपयोगिताओं और दवाओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित कर रहे हैं।

जिन किसानों को सोशल मीडिया का कभी पता नहीं था वे फेसबुक पर अपना अकाउंट खोल रहे हैं। इंस्टाग्राम और ट्विटर और इसके उपयोग को सीखना। गोदी मीडिया द्वारा झूठी कथा का सामना करने के लिए और दुनिया के सामने अपना पक्ष रखने की अहमियत वे जानते हैं ।गाजीपुर मोर्चा भी होली के लिए कमर कस रहा है। किसानों का कहना है कि दुनिया इस साल हमारी होली देखने आएगी। हमारे आंदोलन के रंग इस वर्ष हमारे होली के रंग होंगे। वे कहते हैं, जैसे हम अपनी बाधाओं को एक साथ पूरा करते हैं और हम अपने त्योहार भी एक साथ मनाएंगे। एक युवा किसान कहते हैं, "जब तक बिल वापसी नहीं, तब तक जीना यहाँ, मरना यहाँ!

बिहार के पटना में भी हुई किसान-मजदूर महापंचायत

नवकिरण नत्त, पटना

बिहार की राजधानी पटना में 18 मार्च 2021 को गेट पब्लिक लाइब्रेरी के मैदान में हजारों की गिनती में राज्य के कोने कोने से किसान मजदूर इक्ट्ठा हुए। उन्होंने दिल्ली की सरहदों पर चल रहे किसान आंदोलन को समर्थन देते हुए कहा कि मोदी सरकार द्वारा लाए गए किसान व देश विरोधी तीनों कृषि कानून न केवल हमारी खेती को कॉरपोरेटों का गुलाम बना देंगे बल्कि खाद्य सुरक्षा, जनवितरण प्रणाली, पोषाहार सरीखी योजनाओं को भी खत्म कर देंगे। इनकी भारी मार गरीबों-मजदूरों पर भी पड़ेगी। किसान-मजदूरों की इस महापंचायत ने तीनों कृषि कानूनों को रद्द करने तथा बिहार विधानसभा से इनके खिलाफ प्रस्ताव पास करने की मांग की।

मोदी सरकार के क्रूरतम हमलों व किसान आंदोलन को सत्ता के द्वारा लगातार बदनाम करने की साजिशों का मुंहतोड़ जवाब देते हुए देशव्यापी किसान आंदोलन ने चैथे महीने में प्रवेश कर लिया है। सरकार नहीं चाहती है कि गैर-खेतिहर नागरिक व किसानों के बीच कोई एकता निर्मित हो। किसान आंदोलन को अलगाव में डालने के इरादे से सरकार तमाम संवैधानिक कायदे-कानूनों का उल्लंघन करके किसानों के साथ-साथ उनके आंदोलन के समर्थन में उतर रहे नागरिक आंदोलनों के कार्यकर्ताओं के भी दमन पर तुली है। महापंचायत ने मोदी सरकार के इस तानाशाही रवैये की कड़ी आलोचना की और किसान आंदोलन सहित न्याय व अधिकार के आंदोलन में जेल में बंद तमाम लोगों की रिहाई की मांग की।

2006 में सत्ता में आते ही नीतीश सरकार ने एपीएमसी एक्ट को खत्म कर बिहार के किसानों से सरकारी मंडियां छीनकर उन्हें बाजार के हवाले कर दिया। यदि सरकारी मंडियों को खत्म कर देने से किसानों का भला होता तो आज सबसे अच्छी स्थिति में बिहार के किसान होते, लेकिन हालत ठीक उल्टी है। बिहार में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर धान अथवा अन्य फसलों की खरीददारी बेमानी है। यहां के किसान 900-1000 रु. प्रति क्विंटल की दर से धान बिचौलियों व व्यापारियों के हाथों बेचने को मजबूर हैं। किसानी की बुरी हालत के कारण राज्य से गरीबों का पलायन बदस्तूर जारी है। धीरे-धीरे करके व्यापार मंडल, एफसीआई, एसएफसी आदि सभी संस्थाएं निष्क्रिय व कमजोर कर दी गई हैं। इन कानूनों के असर को झेल रहे बिहार के किसान मजदूरों ने न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी दर्जा देने, कृषि बाजार समितियों को पुनर्जीवित करने तथा एपीएमसी एक्ट की पुनर्बहाली की मांग ज़ोरदार तरीके से उठाई।

महापंचायत ने बिहार में भूख से लगातार होती मौतें पर चिंता व्यक्त की। बिहार के कसबे सुपौल में पिछले दिनों आर्थिक तंगी के कारण एक ही परिवार के 5 लोगों ने सामूहिक आत्महत्या की। ग्लोबल हंगर इंडेक्स में 117 देशों की सूची में 103 वें स्थान पर होने के बावजूद मोदी सरकार द्वारा खाद्य पदार्थों से इथेनॉल जैसे अखाद्य पदार्थों का निर्माण भूख से जूझती देश की जनता को मार देने की साजिश के अलावा कुछ नहीं है। बिहार सरकार भी खद्य पदार्थों से इथेनॉल बनाने का फैसला ले चुकी है। और ऊपर से तीनों नए कृषि कानून ला कर, जितनी भी खाद्य सुरक्षा थी उसे खत्म किया जा रहा है। महापंचायत ने बिहार सरकार से ऐसे गरीब विरोधी व भूख के दायरे को बढ़ाने वाले निर्णयों को राज्य में लागू न करने की मांग की।

आखिर में महापंचायत ने संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर 26 मार्च को आयोजित भारत बंद का पुरजोर समर्थन किया और उसे एक ऐतिहासिक बंद में तब्दील कर देने का प्रण लिया। बिहार के लोगों का मानना है कि शहीद-ए-आजम भगत सिंह के पंजाब से उठ खड़ा किसान आंदोलन, स्वामी सहजानंद सरस्वती - रामनरेश राम जैसे किसान नेताओं की सरजमीं बिहार में नया आवेग व विस्तार पा रहा है।

संसद और किसान

हरिशंकर परसाई

अध्यक्ष ने कहा - "सदन ये जानना चाहता है कि इन बर्बाद किसानों की समस्या को शासन कैसे हल करेगा?"

मंत्री ने वक्तव्य दिया - "अध्यक्ष महोदय! ऐसी समस्याओं को हल करने का यही एकमात्र और अचूक तरीका हमारे पास है। जब भी कोई हमारे पास शिकायत लेकर आता है, हम कह देते हैं कि तुम्हें कम्युनिस्टों ने भड़काया है। इससे समस्या हल हो जाती है। अध्यक्ष महोदय, मैंने इस नुस्खे को अपने बच्चे पर आजमा के देख लिया है। कल उसकी माँ बाहर गई हुई थी। लड़के को भूख लगी और वो रोने लगा। मैंने उससे कहा - क्यूँ रोता है? मालूम होता है, तुझे कम्युनिस्टों ने बहकाया है! अध्यक्ष महोदय, इतना सुनते ही लड़का चुप हो गया और उसे दूध पिलाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। इसलिए जब मैं कहता हूँ कि तुम्हें कम्युनिस्टों ने बहकाया है तो ये समझ लेना चाहिए कि उनकी समस्या हल हो चुकी है।"

'वाक आउट! स्लीप आउट! ईट आउट!'

भगत सिंह-सुखदेव-राजगुरु और पाश के रास्ते पर युवा

सिंघु बॉर्डर से एक युवा

किसी भी आंदोलन को खड़ा करने के साथ साथ आन्दोलन को जीवित रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। दिल्ली की सीमाओं पर भले ही इसे 112 दिन हुए है पर पंजाब में 9 महीने से ज्यादा हो गए है। इस आंदोलन की एक बड़ी ताकत यह है कि युवा पीढ़ी ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है।भगत सिंह ने विद्यार्थियों के नाम लिखे पत्र में साफ साफ लिखा है कि राजनैतिक तौर पर पिछड़ेपन को दूर करना युवा की जिम्मेदारी है। उन्होंने लिखा है "नौजवानों को क्रांति का यह संदेश देश के कोने-कोने में पहुँचाना है, फैक्ट्री कारखानों के क्षेत्रों में, गंदी बस्तियों और गाँवों की जर्जर झोपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों में इस क्रांति की अलख जगानी है, जिससे आजादी आएगी और तब एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण असम्भव हो जाएगा" भगत सिंह के इन विचारों को सार्थक करते हुए युवाओं ने इस आंदोलन में खुद को बाहरी ताकत नहीं माना और बिल्कुल अंदर रहकर उसे जिंदा रखा है। सरकार के अनेक हमले हुए। सुनियोजित हिंसक हमला, पुलिस द्वारा झूठे केस बनाकर जेल में डालना आदि। पर युवा आज भी इस आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लेकर जा रहे है।

23 मार्च को शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव की शहादत दिवस पर सिंघु बॉर्डर पर भारी संख्या में नौजवान इकट्ठे होंगे। जिस युवा को नशों में फसाने के प्रयास किये जा रहे है, जिस युवा को नव उदारवाद के गर्त में धकेला जा रहा है, जिस युवा को खेती किसानी से निकालकर सस्ते मजदूर बनाने के प्रयास किये जा रहे है, वो इंक़लाब का झंडा और हौसला लेकर सिंघु बॉर्डर पहुंच रहा है। 18 मार्च को पैदल यात्रा करता हुआ युवाओं का एक बड़ा जत्था किसानों मजदूरों को एकजुट करता हुआ पंजाब के खटकड़ कलां से शुरू होगा। एक और जत्था 18 मार्च को ही लाल सड़क हांसी, हिसार हरियाणा से शुरू होकर 23 मार्च को टीकरी बार्डर पहुँचेगा। तीसरी यात्रा मथुरा से शुरू होकर पलवल पड़ाव पर पहुंचेगी। संचार में विघ्न के कारण किसान नेताओं और नौजवानों के अंदर एक अंतर आया जो समय के साथ पूरा हो रहा है। नौजवानों ने नौजवान किसान सहयोग टीम बनाकर उन सब जिम्मेदारी को अपनाने का वादा किया है जो आज इस आन्दोलन की ज़रूरत है। जाति और जेंडर की जंजीरे तोड़ती नौजवान पीढ़ी हर एक के लिए स्पेस पैदा कर रही है जो इस आन्दोलन को सफल बना सके। नौजवान मजदूर नेताओ के निरंतर संघर्ष के कारण ही मजदुर किसान एकता ज़िंदाबाद का नारा मजबूती पकड़ रहा है। इस आंदोलन में युवा पुरुषों ने उस ऐतिहासिक अन्याय को स्वीकारने की शुरुआत की है जो वे महिलाओं पर पितृसत्ता के सुख में करते आ रहे है। काम में बंटवारे से लेकर निर्णय लेने में लैंगिक विभाजन खत्म करने के बीज इस आंदोलन ने गहनता से बीज दिए है। पुरुष इस आंदोलन को उन सब कामों को अपनी जिम्मेदारी समझ रहे है जो ऐतिहासिक रूप से महिलाओं पर थोपे गए है। खाना बनाना, सफाई करना, बर्तन व कपड़े धोना आदि काम तो पुरुष कर ही रहे है परंतु इससे से परे जो लैंगिक समझदारी दिखाते है उन सब कामों में भी बिना किसी एहसान फरामोशी के युवा काम कर रहे है। सैनिटरी पैड्स का आसानी से उपलब्ध होना या रात में भी एक आज़ाद माहौल मिलना इस छोटे से समय में कर पाना असंभव था पर युवाओं ने क्रांति के असल मायनों को समझा है। युवाओं के इस नजरिए ने सामाजिक क्रांति खड़ी की है। चूंकि अब कटाई का सीजन आ रहा है तो ट्रैक्टर व ट्राली दोनों आवश्यक रूप से खेतों में चाहिए इसलिए युवाओं ने अपने बुजुर्ग महिलाओं व पुरुषों के लिए कच्चे घर बना लिए है। कल ही साहनेवाल के एक समाजसेवी ने 80 कूलर किसानों को गर्मी से लड़ने के लिए दिए। 4 दिन पहले कुछ लोगों ने 800 पंखे मोर्चे को दिए। सिंघु बॉर्डर पर बड़ी संख्या में ठंडे व साफ पानी के लिए वाटर कूलर भी लगा दिए गए है।

23 मार्च न सिर्फ भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव का शहीदी दिवस है बल्कि इस दिन अवतार सिंह पाश का भी बलिदान दिवस है। भगत सिंह फांसी से ठीक पहले एक क्रांतिकारी किताब पढ़ रहे होते है। अवतार पाश ने कहा है कि हमारे जवानों को उस पेज से अपनी जिंदगी शुरू करने की जरूरत है जिस पेज को भगत सिंह ने मोड़कर छोड़ा था। आज की जवानी भगतसिंह के उस विचार को अपना रही है जिसमे उन्होंने बम पिस्तौल की बजाय विचारों से क्रांति करने की बात कही है। सिंघु बॉर्डर पर बैठे युवा बाजारीकरण के दौर की बनावटी भावनाओं और इस इस आंदोलन की के जज्बे को एक कतार में खड़ा नहीं करते। आज के युवा अब अवतार सिंह पाश के जैसे खेतों की औलाद होने का एहसास करवाएगी। उन्हें व्यक्तिगत लालसा और बाजारीकरण की भाषा नहीं बोलनी। वे करेंगे तो हमेशा उस घटते एमएसपी की बात करेंगे, दलित औरत के साथ होती ज्यादती की बात करेंगे, भूमिगत जल के गिरते स्तर की बात करेंगे, वे समय बताने की उस घड़ी की बात करेंगे जो कलाई पर बंधी हुई तो चल रही है पर हमारे बुजुर्गों की आंख में सालों से रुकी हुई है। आन्दोलन के युवा इंटरनेट पर "बाजरे दा सिट्टा" पर कोई हवाई वीडियो से बनाने की बजाय "बाजरे दे एमएसपी" की डिबेट कर रहे है। वें दिल्ली की सीमाओं पर मर रहे किसानों की लाशों के चेहरे देखने को अब किस्मत के फल नहीं बोलेंगे, वे अब लड़ेंगे कि खेती सेक्टर में आत्महत्या और पेस्टिसाइड से हो रही मौत प्राकृतिक मौत नहीं है, वे राज्य द्वारा किये जा रहे राजनैतिक कत्ल है।

आज जब 23 मार्च को हज़ारो की संख्या में महिला व पुरुष नौजवान दिल्ली की सरहदों पर इकट्ठे होंगे तो केंद्र की हुकूमत इस बात से बौखलायेगी कि 21वीं सदी के भगत सिंह सरकार से टक्कर ले रहे है। बिना माफी मांगे अपने हको के लिए ये नौजवान विचारों और अपनी मानसिक बुद्धिमत्ता के आधार पर सरकार से लड़ने आ रहे है।

हर मोर्चे के हालात, ज़रूरतें और व्यवस्था अलग-अलग है!

हरतीरथ सिंह, शाहजहांपुर मोर्चा

आंदोलन के संदर्भ में अधिकतर शाहजहांपुर मोर्चे का नाम भुला सा दिया जाता है, मैं इसे एक परित्यक्त बच्चे की उपमा देता है। इस लेख में अपने हेमकुंट फ़ाउंडेशन के साथ एक सेवादार होने के इस मोर्चे पर हुए अपने अनुभव लिख रहा हूँ। यह मोर्चा बाक़ी मोर्चों के बनिस्पत छोटा है और इसे किसी तरह का मीडिया कवरेज या रोज़मर्रा का राहत-सहयोग नहीं मिलता। हेमकुंट फ़ाउंडेशन एकमात्र संस्था है जो यहाँ शुरू से काम कर रही है।

शाहजहांपुर मोर्चे पर संख्या लगातार बढ़ रही है फिर भी क्षेत्रीय या राष्ट्रीय मीडिया की नज़र इस पर नहीं पड़ी है। यहाँ खाना मिलना ख़ुशनसीबी की बात है क्योंकि पूरे मोर्चे पर सिर्फ़ दो लंगर चलते है। शाहजहांपुर में दिसम्बर में फ़ाउंडेशन के आने से पहले पानी, बिजली और रहने जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी थी। पूरे मोर्चे पर सिर्फ़ एक आर०ओ० और ठंडे पानी की मशीन है। हमने यहाँ पर एक हाट लगाई है जहां किसान अपनी ज़रूरतों का सामान निशुल्क ले सकते है।

हमारे पास पिज़्ज़ा, पकौड़े और खीर जैसे पकवान नहीं है जो की सिंघु मोर्चे पर मिलते है। यहाँ सिर्फ़ डाल और दो रोटी मिल जाए उसी में सब खुश है। दुर्भाग्य से शाहजहांपुर इस आंदोलन का ऐसा मोर्चा है जिस पर किसी का भी ध्यान नहीं जाता। हाल ही की बारिश के बाद मैं सिंघु से शाहजहांपुर गया। हमें अनुभव से पता था कि तिरपाल से बने टेंट इस आँधी-तूफ़ान में नहीं टिक पाएँगे। हम भोर में तीन बजे शाहजहांपुर पहुँचे।

वहाँ सिर्फ़ हेमकुंट फ़ाउंडेशन द्वारा बनाए गए टेंट खड़े थे। बाक़ी सब टेंट उखाड़ चुके थे जैसा हमें अंदेशा था। हमारे एक टेंट में 12 लोगों के सोने की जगह थी लेकिन उस दिन हर टेंट में 20 लोग सो रहे थे। जब हम पहुँचे तो अधिकतर किसान ठंड से कांपते हुए सो रहे थे। हमने चुपचाप काम शुरू किया।

इस दौरान वहाँ लाइन में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई, जिससे सारे पंखे जुड़े थे। संयोगवश इसे जल्द ही क़ाबू में कर लिया गया। हमारी लजिस्टिक टीम ने बहुत सारे और टेंट लगाए और हेमकुंट फ़ाउंडेशन की हाट में नया सप्लाई का स्टॉक भरा। इसके बाद सुबह के 5 बजे हम वहाँ से निकले। हमने चढ़ती कला में पूरा दिन बिताया, और अगले दिन सब लोग आंदोलन के लिए नयी ऊर्जा से जुट गए, हमेशा की तरह।

घर में ठण्डे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है

अदम गोंडवी

घर में ठंडे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है।
बताओ कैसे लिख दूँ धूप फाल्गुन की नशीली है।।

भटकती है हमारे गाँव में गूँगी भिखारन-सी।
सुबह से फरवरी बीमार पत्नी से भी पीली है।।

बग़ावत के कमल खिलते हैं दिल की सूखी दरिया में।
मैं जब भी देखता हूँ आँख बच्चों की पनीली है।।

सुलगते जिस्म की गर्मी का फिर एहसास वो कैसे।
मोहब्बत की कहानी अब जली माचिस की तीली है।।

NEWS FROM TROLLEYS

ਟਰਾਲੀ ਟਾਈਮਜ਼

ਅੰਦੋਲਨ ਦੀ ਆਪਣੀ ਆਵਾਜ਼

VOICE OF KISAN PROTEST 2020 | TROLLEY TIMES | VOL 1. edition No. 12 | TUESDAY, MARCH 6TH, 2021

ਆਰਥਿਕ ਟੀਚੇ ਸੰਵਿਧਾਨਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਤੋਂ ਮੁਨਕਰ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੇ

ਆਨੰਦ ਤੇਲਤੁੰਬੜੇ, ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪ: ਜਗਸੀਰ ਸਿੱਧੂ

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਅਤੇ ਲੇਖਕ ਆਨੰਦ ਤੇਲਤੁੰਬੜੇ ਇਸ ਸਮੇਂ ਗੈਰਕਾਨੂੰਨੀ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ (ਰੋਕਥਾਮ) ਐਕਟ ਦੇ ਅਧੀਨ ਮਹਾਰਾਸ਼ਟਰ ਵਿੱਚ ਤਲੋਜਾ ਜੇਲ੍ਹ ਵਿੱਚ ਬੰਦ ਹਨ। ਉਹ ਭੀਮ ਕੋਰੇਗਾਓਂ ਕੇਸ ਦੀ ਸੁਣਵਾਈ ਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਜਨਤਕ ਖੇਤਰਾਂ ਜਾਂ ਪੀਐਸਈਜ਼ ਦਾ ਨਿੱਜੀਕਰਨ ਕਰਨ ਲਈ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮਾਂ ‘ਤੇ ਚੱਲ ਰਹੀ ਬਹਿਸ ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਨਿੱਜੀਕਰਨ ਦੇ ਹਮਾਇਤੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਪੱਖ ਵਿੱਚ ਦਲੀਲ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਨਿੱਜੀ ਖੇਤਰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਜਨਤਕ ਖੇਤਰ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ ਕੁਸ਼ਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਰ ਜਾਣੇ-ਅਣਜਾਣੇ ਵਿੱਚ ਇਹੀ ਤਰਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਵਿੱਚ ਇਕ ਊਟ-ਪਟਾਂਗ ਦਲੀਲ ਹੈ ਪਰ ਇਹ ਜਾਇਜ਼ ਸਵਾਲ ਪੈਦਾ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ: ਫਿਰ ਕਿਉਂ ਨਾ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਹੀ ਨਿੱਜੀਕਰਨ ਕਰ ਦੇਈਏ?

ਆਪਣੀ ਗੱਲ ਵਿੱਚ ਉਹ ਅਕਸਰ ਹੀ ਹਵਾਲਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਜ ਅਮਰੀਕਾ, ਜੋ ਕਿ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰ ਦਾ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਪੱਖ ਪੂਰਦਾ ਹੈ, ਇੱਕ ਵਿਸ਼ਵਵਿਆਪੀ ਆਰਥਿਕ ਤਾਕਤ ਬਣ ਕੇ ਅੱਗੇ ਆਇਆ, ਜਦੋਂ ਕਿ ਯੂਨਾਈਟਿਡ ਕਿੰਗਡਮ (ਇੰਗਲੈਂਡ), ਜੋ ਜਨਤਕ ਖੇਤਰ ਦਾ ਪੱਖ ਪੂਰਦਾ ਸੀ, 1980ਵਿਆਂ ਦੇ ਦਹਾਕੇ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਦੀਵਾਲੀਆਪਨ ਦੀ ਕਗਾਰ ’ਤੇ ਸੀ। ਉਹ ਬੜੀ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪੂੰਜੀਵਾਦ, ਜੋ 1929 ਦੀ ਭਾਰੀ ਮੰਦੀ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਅੰਤ ਵੱਲ ਸੀ, ਨੂੰ ਜਨਤਕ ਨਿਵੇਸ਼ ਦੇ ਕੇਨੇਸੀਅਨ ਨੁਸਖ਼ੇ ਦੁਆਰਾ ਬਚਾਇਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਫਿਰ ਇਹੀ ਨੁਸਖ਼ਾ ਦੁਨੀਆ ਭਰ ਵਿੱਚ ਜਨਤਕ ਖੇਤਰਾਂ ਦੇ ਨਿਰਮਾਣ ਅਤੇ ਪਸਾਰ ਲਈ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ ’ਤੇ ਅਹਿਮ ਸਾਬਤ ਹੋਇਆ। ਇਹ 1980 ਦੇ ਦਹਾਕੇ ਵਿੱਚ ਨਵ-ਉਦਾਰ ਅਰਥ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਬਦਨਾਮ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਸੀ।

ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਇਹ ਇੱਕ ਤੱਥ ਇਹ ਵੀ ਹੈ ਕਿ ਭਾਰਤ ਦੀਆਂ ਸਮਾਜਵਾਦ ਨਾਲ਼ ਨਹਿਰੂਵਾਦੀ ਮਿਲਣੀਆਂ ਨੇ ਇਸ ਰਲਵੀਂ ਆਰਥਿਕਤਾ ਵਿੱਚ ਜਨਤਕ ਖੇਤਰ ਦੀ ਮੋਹਰੀ ਭੂਮਿਕਾ ਉੱਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਜਿਸਨੇ ਲਾਇਸੈਂਸ ਰਾਜ ਨੂੰ ਪ੍ਰਫੁੱਲਿਤ ਕੀਤਾ। ਅਤੇ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਜਦੋਂ ਭਾਰਤ ਨੇ 1980ਵਿਆਂ ਵਿੱਚ ਉਦਾਰੀਕਰਨ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰ ਉੱਪਰ ਉੱਠਿਆ ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਜਨਤਕ ਖੇਤਰ ਨੂੰ ਪਛਾੜ ਦਿੱਤਾ। ਪਰ ਇਤਿਹਾਸ ਦੇ ਇਸ ਸਰਲ ਪਾਠ ਵਿੱਚ ਵੀ, ਸਾਨੂੰ ਯਾਦ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹਿਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਿਰਫ਼ ਨਹਿਰੂ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਇਹ 1944 ਦੀ ਬੰਬੇ ਯੋਜਨਾ ਸੀ, ਜੋ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੱਠ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸਰਮਾਏਦਾਰਾਂ ਦੁਆਰਾ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸੀ, ਜਿਸ ਨੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਉਦਯੋਗਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ਾਲ ਜਨਤਕ ਨਿਵੇਸ਼ ਦਾ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਸਿਆਸੀ ਤੌਰ ‘ਤੇ, ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਨੇ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਲਈ ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਬਿਆਨਬਾਜ਼ੀ ਦਾ ਕੰਮ ਕੀਤਾ। ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਰੂਸ ਅਤੇ ਚੀਨ ਬਾਰੇ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜਨਤਕ ਸਨਅਤਾਂ ਦਾ ਨਿੱਜੀਕਰਨ ਕੀਤਾ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨੇ “ਉੱਪਰ ਉੱਠਣਾ” ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਸੀ, ਤਾਂ ਇਹ ਵੀ ਯਾਦ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਫਲਤਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਨਤਕ ਸਨਅਤਾਂ ਦੁਆਰਾ ਬਣਾਏ ਗਏ ਬੁਨਿਆਦੀ ਢਾਂਚੇ ਕਾਰਨ ਵੀ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ, ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਕੀਤੇ ਬਗੈਰ ਇਤਿਹਾਸਕ ਅੰਕੜਿਆਂ ਦੀ ਅਜਿਹੀ ਥੋਥੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਦਲੀਲ ਤਾਂ ਜਿੱਤ ਸਕਦੀ ਹੈ ਪਰ ਇਸਦਾ ਸਹੀ ਮਤਲਬ ਸਮਝਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਨਹੀਂ ਕਰੇਗੀ।

ਇਹ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰ ਨੂੰ ਪਬਲਿਕ ਸੈਕਟਰ ਨਾਲੋਂ ਉੱਚ ਕੁਸ਼ਲਤਾ ਵਾਲਾ ਬਿਆਨ ਕਰੇਗੀ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਅੰਕੜੇ ਛੱਡ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰ ਦੇ ਗੁਣਗਾਨ ਕਰਨ ਲੱਗ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲੀਆਂ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਟੈਕਸ ਅਤੇ ਗੈਰ-ਟੈਕਸ ਛੋਟਾਂ ਦਾ ਹਿਸਾਬ ਵੀ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪੀਐਸਯੂ ਬੈਂਕਾਂ ਦੇ ਨਾਨ ਪਰਫ਼ਾਰਮਿੰਗ ਐਸਟ (NPA) ਦਾ ਵੱਡਾ ਹਿੱਸਾ ਵੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰਾਂ ਨੇ ਹੀ ਮੱਲਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ।

1995 ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਦੀ ਤੇਲ ਸਨਅਤ ਵਿਚ ਨਿਜੀਕਰਨ ਲਈ ਇਕ ਮਾਹਿਰਾਂ ਦੀ ਟੀਮ ਦਾ ਮੈਂਬਰ ਸੀ। ਮੈਂ ਜਨਤਕ ਸਨਅਤ ਓ ਐਨ ਜੀ ਸੀ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਦੀਆਂ ਤੇਲ ਕੰਪਨੀਆਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਚ ਵਾਚਿਆ। ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਪਰੇਸ਼ਾਨੀ ਲਈ, ਸਾਡੀ ਟੀਮ ਨੂੰ ਕੋਈ ਖਾਸ ਫਰਕ ਨਹੀਂ ਲੱਭਿਆ। ਦੁਬਾਰਾ ਫਿਰ, ਉਦਾਰੀਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਜਦੋਂ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਜਨਤਕ ਸਨਅਤਾਂ ਦੇ ਬੋਰਡਾਂ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਸ਼ਕਤੀ ਦਿੱਤੀ, ਤੇਲ ਕੰਪਨੀਆਂ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰ ਵਿੱਚ ਨਿੱਜੀ ਭਾਈਵਾਲਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ ਦਰਜਨਾਂ ਸਾਂਝੇ ਉੱਦਮ ਕਰਨ ਲਈ ਪਹੁੰਚੀਆਂ (ਪੀਐਸਈ ਇੱਕੁਇਟੀ 50% ਤੱਕ ਸੀਮਤ ਸੀ)। ਕੁਝ ਸਾਲਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕੁਝ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਇਹ ਸਭ ਉੱਦਮ ਬੰਦ ਹੋ ਗਗਏ। ਇਸ ਲਈ, ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਕੋਈ ਠੋਸ ਪ੍ਰਮਾਣ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਉੱਦਮ ਪੀਐਸਈ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ ਕੁਸ਼ਲ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਹਾਲਾਂਕਿ, ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਣ ਕਾਰਕ ਕੁਸ਼ਲਤਾ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ੀਲਤਾ ਹੈ, ਜਿਸਦੀ ਬਹੁਤੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਇਥੋਂ ਤੱਕ ਕਿ ਰਵਾਇਤੀ ਕਾਰੋਬਾਰ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਵਿੱਚ ਵੀ, ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ੀਲਤਾ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕੁਸ਼ਲਤਾ ਵੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਣ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਕਿਉਂਕਿ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ੀਲਤਾ ਕਿਸੇ ਉੱਦਮ ਦੇ ਟੀਚੇ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਦਾ ਇੱਕ ਮਾਪ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਕਾਰੋਬਾਰ ਥੋੜ੍ਹੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਪੈਸਾ ਤਾਂ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਆਪਣੀਆਂ ਰਣਨੀਤਕ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ‘ਤੇ ਖਰਾ ਉਤਰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਕੋਈ ਚੰਗਾ ਕਾਰੋਬਾਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਜੋ ਆਰਥਿਕਤਾ ਆਪਣੀ ਜੀਡੀਪੀ ਵਿੱਚ ਤਾਂ ਭਾਰੀ ਛਲਾਂਗ ਲਗਾਉਂਦੀ ਹੈ ਪਰ ਆਪਣੇ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਆਜ਼ਾਦੀ, ਸਿਹਤ, ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਵਰਗੀਆਂ ਮੁੱਢਲੀਆਂ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰ ਪਾਉਂਦੀ, ਉਹ ਇੱਕ ਅਸਫਲ ਆਰਥਿਕਤਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਚਲੋ ਇੱਕ ਵਾਰ ਮੰਨ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਜੀਡੀਪੀ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਕਰਨ ਲਈ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨੂੰ ਕੁਝ ਨਾਮਵਰ ਕਾਰਪੋਰੇਟ ਹਸਤੀ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਕਰਦੇ ਹਾਂ, ਤਾਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ ‘ਤੇ ਲੈ ਜਾਵੇ। ਪਰ ਕੀ ਇਹ ਇੱਕ ਰਾਸ਼ਟਰ ਵਜੋਂ ਸਾਡੇ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰੇਗਾ? ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੇ ਟੀਚੇ ਨੂੰ ਸੰਵਿਧਾਨਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਮਨਫ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਇਸਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਅਤੇ ਲੇਖਾਂ ਅਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਰਾਜ ਨੀਤੀ ਦੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਵਿੱਚ ਦੱਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਵਸਥਾ ਆਜ਼ਾਦੀ, ਬਰਾਬਰੀ ਅਤੇ ਭਾਈਚਾਰੇ ਅਤੇ ਨਿਆਂ ‘ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਬੀ.ਆਰ. ਅੰਬੇਦਕਰ ਨੇ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਵਿੱਚ ਸਪਸ਼ਟ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਜਦੋਂ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਕੋਈ ਠੋਸ ਪ੍ਰਮਾਣ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸੈਕਟਰ ਪਬਲਿਕ ਖੇਤਰ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ ਕੁਸ਼ਲ ਹੈ, ਇਸ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸ਼ੱਕ ਨਹੀਂ ਕਿ ਇਹ ਭਾਰਤ ਦੇ ਆਰਥਿਕ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਮਾਪਦੰਡ ਨੂੰ ਕਦੇ ਪੂਰਾ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ।

ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ, ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਦਾ ਨਵਾਂ ਰਾਹ

ਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਇੰਡੀਅਨ ਐਕਸਪ੍ਰੈਸ,
ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪ: ਪ੍ਰੋ ਪ੍ਰੀਤਮ ਗਿੱਲ ਚੂਹੜਚੱਕ

ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਰੋਸ ਮੁਜ਼ਾਹਰੇ ਪਿਛਲੇ ਹਫਤੇ 100 ਦਿਨਾਂ ਦੀ ਅਹਿਮ ਹੱਦ ਪਾਰ ਕਰ ਗਏ ਹਨ। ਖੇਤੀ ਬਾਰੇ ਬੇਚੈਨੀ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪੇਂਡੂ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿਚ 2020 ਦੀਆਂ ਗਰਮੀਆਂ ਵਿਚ ਹੀ ਉਭਰਨੀ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਈ ਸੀ ਅਤੇ ਨਵੰਬਰ ਦੇ ਅਖੀਰ ਵਿਚ, ਪਹਿਲੇ ਰੋਸ ਮੁਜ਼ਾਹਰੇ ਦਿੱਲੀ ਬਾ’ਡਰਾਂ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਏ ਸਨ। ਸਿੰਘੂ, ਟੀਕਰੀ, ਸ਼ਾਹਜਹਾਨਪੁਰ ਖੇੜਾ, ਗਾਜੀਪੁਰ, ਜੋ ਪਹਿਲਾਂ ਦਿੱਲੀ ਸ਼ਹਿਰ ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਪਿੰਡਾਂ ਦੇ ਨਾਂ ਸਨ, ਹੁਣ ਜਮਹੂਰੀ ਵਿਰੋਧ ਦੀ ਲੋਕ ਸੁਰਤ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਗਏ ਹਨ। ਰੋਸ ਮੁਜ਼ਾਹਰਿਆਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਅਹਿਮ ਪਹਿਲੂ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਅੱਧਾ ਸਾਲ ਬੀਤਣ ਬਾਅਦ ਵੀ ਜਾਰੀ ਹਨ। ਜਦੋਂ ਕਿਸਾਨ ਯੂਨੀਅਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣਾ ਪੰਜਾਬ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਸਫ਼ਰ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਤਾਂ ਸਿਆਸੀ ਮਾਹਰ ਇਸ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਗਿਣਤੀ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਰਖਦੇ ਸੀ। ਬਾਵਜੂਦ, ਰੋਹ ਦੀਆਂ ਸਰਦੀਆਂ ਹੁਣ ਗਰਮੀਆਂ ਵਿਚ ਬਦਲ ਰਹੀਆਂ ਹਨ।

ਅੰਦੋਲਨ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਅਜੇ ਵੀ ਧੁੰਦਲੇ ਹਨ, ਪਰ ਸਮਾਜੀ-ਸਿਆਸੀ ਜ਼ਮੀਨ ਵਿਚ ਹੋ ਰਹੇ ਦੋ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਫੇਰਬਦਲ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਦਿਖਾਈ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਹਿਲਾ, ਅੰਦੋਲਨ ਦਾ ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਧੀ ਵਿਧਾਨ ਪਿਛਲੇ ਮਹੀਨਿਆਂ ਵਿੱਚ ਸੁਲਝਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਬਦੀਲੀ ਦਾ ਕੇਂਦਰ ਬਿੰਦੂ ਜਾਤੀ ਪ੍ਰਥਾਵਾਂ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਵਰਗ-ਹਿੱਤਾਂ ਵਿਚ ਸਾਂਝ ਕਾਇਮ ਕਰਨ ਦਾ ਤਰੀਕਾ ਕਾਰ ਹੈ। ਜ਼ਮੀਨ ‘ਤੇ ਚੱਲ ਰਹੇ ਇਸ ਪੁਨਰ ਗਠਨ ਦਾ ਸੰਕੇਤ ਦੋ ਹਫਤੇ ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਸਾਨ ਯੂਨੀਅਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਪੁਰਬ ਮਨਾਏ ਜਾਣਾ ਸੀ। ਇਸ ਜਸ਼ਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਇਸ ਗੱਲ ‘ਚ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਖੇਤੀ ਅਰਥਚਾਰੇ ਵਿਚ ਜੱਟ ਤੇ ਦਲਿਤ ਭਾਈਚਾਰਿਆਂ ਵਿਚਲੇ ਜਾਤੀ ਪਾੜੇ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਰੱਸੇ ਵਾਂਗ ਮੇਲਦਾ ਹੈ। ਦੂਜਾ, ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਨਾਲ ਜੋੜਨ ਸਬੰਧੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਹੈ। ਇੱਕ ਹਫ਼ਤਾ ਪਹਿਲਾਂ, ਸੰਯੁਕਤ ਕਿਸਾਨ ਮੋਰਚਾ SKM ਨੇ ਟਰੇਡ ਯੂਨੀਅਨਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ ਖੇਤੀ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਤੇ ਲੇਬਰ ਕੋਡਾਂ ਵਿਰੁੱਧ ਸੰਘਰਸ਼ ਵਿੱਢਣ ਲਈ ਵੀ ਹੱਥ ਮਿਲਾਇਆ ਹੈ। ਇਹ ਸ਼ਾਇਦ ਪਹਿਲਾ ਮੌਕਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਪਿਛਲੇ ਤੀਹ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਲਾਗੂ ਕੀਤੇ ਆਰਥਿਕ ਸੁਧਾਰਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਅੰਨ ਉਪਜਾਉਣ ਵਾਲੇ - ਕਿਸਾਨਾਂ ਤੇ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਨੇ ਕੋਈ ਗੱਠਜੋੜ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਯਤਨਾਂ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਬਾਰੇ ਤਾਂ ਧੁੰਦੂਕਾਰਾ ਹੀ ਹੈ ਪਰ ਇਹ ਗੱਲ ਧੁੱਪ ਵਾਂਗ ਸਾਫ਼ ਹੈ ਕਿ ਬੇਮੁਹਾਰ ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ, ਜਿਸ ਨੇ ਲੋਕਾਈ ਦੇ ਵੱਡੇ ਹਿੱਸੇ ਨੂੰ ਮੰਡੀ ਦੇ ਥਪੇੜਿਆਂ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ, ਵਿਰੁੱਧ ਪਹਿਲਾ ਲਲਕਾਰਾ ਹੈ।

ਖੜੋਤ ਵਾਲੀ ਸਥਿਤੀ ਜਿਸ ਨੇ ਹਲੂਣਿਆ ਹੈ, ਉਹ ਹੈ ਸਥਾਪਤ ਕਿਸਾਨ ਮਜ਼ਦੂਰ ਯੂਨੀਅਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ਼ ਨਾਲ਼, ਨਵੇਂ ਨੌਜਵਾਨ ਆਗੂਆਂ ਦਾ ਉਭਾਰ। ਇਸ ਬਦਲੇ ਹੋਏ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਵਿੱਚ ਉਭਰਵੇਂ ਨਾਂ, ਨੌਦੀਪ ਕੌਰ ਤੇ ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਜਿਹੇ ਦਲਿਤ ਮਜ਼ਦੂਰ ਅਧਿਕਾਰ ਕਾਰਕੁਨ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਉਦਯੋਗਿਕ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਦੇ ਕਿਸਾਨੀ ਵਿਰੋਧ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਣ ਦੇ ਤਰਕ ਨੂੰ ਪਛਾਣ ਲਿਆ ਸੀ। ਨੌਦੀਪ ਕੌਰ ਨੇ ਇੱਕ ਇੰਟਰਵਿਊ ਵਿੱਚ ਇਸ ਤਰਕ ਨੂੰ ਇਉਂ ਸਮਝਾਇਆ ਸੀ: “ਕਿਸਾਨ ਅਤੇ ਮਜ਼ਦੂਰ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਦੋਵੇਂ ਉਤਪਾਦਕ ਹਨ। ਕਿਸਾਨ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਉਤਪਾਦਨ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਾਮੇ ਫੈਕਟਰੀਆਂ ਵਿਚ। ਇਹ ਦੋਵੇਂ ਧਿਰਾਂ ਪਿਛਾਂਹ ਵੱਲ ਖਿਸਕ ਰਹੀਆਂ ਹਨ... ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਤੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਪਾਸ ਕੀਤੇ ਗਏ ਬਿੱਲ ਰੱਦ ਕੀਤੇ ਜਾਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ।” ਤਿੰਨ ਮਹੀਨੇ ਪਹਿਲਾਂ ਚਲੰਤ ਜਿਹੀਆਂ ਲੱਗਦੀਆਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਲੀਲਾਂ ਨੂੰ ਹੁਣ ਹੋਰ ਵੀ ਵੱਧ ਮਾਨਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। “ਕਿਸਾਨ ਮਜ਼ਦੂਰ ਏਕਤਾ-ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ” ਦਾ ਨਾਅਰਾ- ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਸਾਨਾਂ ਤੇ ਖੇਤ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਦੀ ਸਾਂਝ ਦੀ ਬਾਤ ਪਾਉਂਦਾ ਸੀ ਹੁਣ ਉਦਯੋਗਿਕ ਕਾਮਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਜੋੜਨ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾਲ ਸਮਰੱਥਾ ਸਿਰਜਦਾ ਹੈ।

ਜਿਸ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਸਰੋਤ ਤੋਂ ਇਹ ਬਦਲਦਾ ਸਮਾਜਿਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਬਣਿਆ ਹੈ, ਉਹ: ਸਿੱਖ ਵਰਤਾਰੇ ਵਿੱਚ ਲੰਬੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਚਲ ਰਿਹਾ ਜਾਤੀ-ਵਿਰੋਧੀ ਸਮਤਾਵਾਦ ਦਾ ਪੁਰਾਣਾ ਖਾਕਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਹਿਰ ਨੇ ਆਪਣੀ ਨੈਤਿਕ-ਬੌਧਿਕ ਊਰਜਾ ਲਈ ਹੈ, ਉਹ ਪੁਰਾਤਨ ਕਾਰ ਵਿਹਾਰ ਦੇ ਪਰਚਲਤ ਵਿਚਾਰ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੰਕਟ ਦੇ ਇਸ ਪਲ ਵਿੱਚ ਨਵੀਂ ਪ੍ਰਸੰਗਤਾ ਬਣਾ ਲਈ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੁਆਰਾ ਕਿਆਸਿਆ ਆਦਰਸ਼ ਬੇਗਮਪੁਰਾ (ਗਮ ਰਹਿਤ ਸ਼ਹਿਰ) ਦੀ ਵਿਆਪਕ ਧਾਰਨਾ ਜੋ ਅਕਸਰ ਹੀ ਰੋਸ ਮੁਜ਼ਾਹਰੇ ਦੇ ਬੋਲਾਂ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ - ਕਾਲਪਨਿਕ ਵਿਤਕਰਾ-ਰਹਿਤ ਸ਼ਹਿਰ, ਇੱਕ ਬੇਦੌਲਤਾ ਸ਼ਹਿਰ, ਸਭ ਨੂੰ ਜੀ-ਆਇਆਂ ਨੂੰ ਕਹਿੰਦਾ ਇਕਸੁਰ ਸ਼ਹਿਰ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਵਰਗਹੀਣ ਸਮਾਜ ਦੇ ਫਲਸਫੇ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਇਸ ਬਰਾਬਰਤਾਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰ ਨੇ ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਕੋਈ ਪੰਜ ਸੌ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਖ਼ਾਰਜ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਇਹ ਜਾਤ-ਵਿਰੋਧੀ ਵਰਤਾਰਾ -ਲੰਗਰ ਦੇ ਰੂਪ ‘ਚ ਸਭ ਨੂੰ ਇਕੱਠੇ ਬੈਠ ਕੇ ਭੋਜਨ ਕਰਨ ਦਾ ਸੱਦਾ ਦਿੰਦਾ; ਹੱਥੀਂ ਕੰਮ ਦੀ ਸ਼ੋਭਾ-ਸੇਵਾ ਤੇ ਕਿਰਤ, ਇਹ ਸਭ ਜਾਤੀਆਂ / ਫਿਰਕਿਆਂ ਦੀ ਊਚ-ਨੀਚ ਨੂੰ ਖੋਖਲਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਵਿਰੋਧ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਦੇਖਣ ਵਾਲੇ ਅਕਸਰ ਪੁਛਦੇ ਹਨ ਕਿ ਭੱਜ ਭੱਜ ਆਦਮੀ ਅਤੇ ਔਰਤਾਂ ਕਿਵੇਂ ਇਕੱਠੇ ਖਾਣਾ ਪਕਾਉਣ ਅਤੇ ਸਾਫ਼-ਸਫ਼ਾਈ ਦੇ ਕੰਮ ਲਈ ਅੱਗੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ, ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਭੇਦ-ਭਾਵ ਉਲ਼ੰਘ ਕੇ ਕਿਵੇਂ ਐਨੇ ਲੋਕ ਹੱਥੀਂ ਕਿਰਤ ਕਰੀ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਉਹਨਾਂ ਸਦੀਆਂ ਪੁਰਾਣੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦਾ ਵਿਖਾਲਾ ਹੈ ਜੋ ਮੰਡੀ-ਖੁੱਲ੍ਹਾਂ ਵਾਲੇ ਖੇਤੀ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਵਿਰੁੱਧ ਸਮਕਾਲੀ ਅੰਦੋਲਨਕਾਰੀਆਂ ਅੰਦਰ ਫਿਰ ਤੋਂ ਸੁਰਤਾਲ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ।

ਫਿਰ ਵੀ, ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਦਾ ਸਵਾਲ ਸਿੱਧਾ-ਪੱਧਰਾ ਨਹੀਂ। ਸਾਡਾ ਪੁੱਛਣਾ ਬਣਦਾ ਹੈ: ਅਜਿਹੇ ਸਿਆਸੀ ਖੱਟ ‘ਤੇ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦੀ ਦਰਜਾਬੰਦੀ, ਧਾਰਮਿਕ ਸ਼ਰੀਕੇਬਾਜ਼ੀ ਤੇ ਵਰਗ-ਹਿਤ ਪਾੜੇ ਅਜੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹਨ, ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਦਾ ਕੀ ਅਰਥ ਹੈ? ਕਿਸੇ ਸਾਂਝੀ ਪਛਾਣ ਨੂੰ ਜਗਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਲਈ, ਫਿਰ, ਲਾਜ਼ਮੀ ਤੌਰ ‘ਤੇ ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਖੇਤੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਨੂੰ ਘੜਦੀਆਂ ਸਮਾਜਿਕ ਵੰਡ ਵਾਲੀਆਂ ਜਮਾਤ, ਜਾਤ ਤੇ ਲਿੰਗ ਦੀਆਂ ਲੀਹਾਂ ‘ਤੇ ਮਿੱਟੀ ਪਾਉਣਾ ਨਹੀਂ। ਬੇਜ਼ਮੀਨੇ ਦਲਿਤ ਮਜ਼ਦੂਰ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਸੈਕਟਰ ਦੀ ਰੀੜ੍ਹ ਦੀ ਹੱਡੀ ਹਨ, ਪਰ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਸਿਰਫ ਤਿੰਨ ਫੀਸਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਮਾਲਕ ਹਨ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਜ਼ਮੀਨੀ ਖੱਤੇ ਛੋਟੇ ਜਾਂ ਹਾਸ਼ੀਆਈ ਹੀ ਹਨ। ਅਤੇ ਕਿਸਾਨ ਅਕਸਰ ਭਾਰੀ ਕਰਜ਼ੇ ਹੇਠ ਦੱਬੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਬੇਜ਼ਮੀਨੇ ਬਣ ਜਾਣ ਦਾ ਖਤਰਾ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਵਧੀ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਨਵੇਂ ਖੇਤੀ ਕਾਨੂੰਨ ਤੇ ਨਵੇਂ ਲੇਬਰ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੀ ਬੰਦਿਸ਼ ਨਾਲ਼ ਲੰਬੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਸੁਲਘਦੇ ਆਰਥਿਕ ਸੰਕਟ ਦੇ ਹੋਰ ਪੀਢਾ ਹੋਣ ਦਾ ਡਰ ਵਧ ਗਿਆ ਹੈ। ਵੱਖ ਵੱਖ ਜਾਤੀਆਂ ਅਤੇ ਕਿੱਤਾ ਸਮੂਹਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਅਜੇ ਵੀ ਨਾਜ਼ੁਕ ਹੀ ਹੈ ਪਰ ਹੁਣ ਰੋਸ ਵਿਖਾਵਿਆਂ ਨੇ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਕਿਸਾਨਾਂ ਲਈ ਸਾਂਝੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਵਿੱਚ ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਲਈ ਨਵਾਂ ਰਾਹ ਖੋਲ੍ਹਿਆ ਹੈ।

ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਕਿਹੜਾ ਰੋਗ ਹੈ?

ਜਸਵੰਤ ਸਿੰਘ ਜ਼ਫ਼ਰ

ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਧਰਤੀ ਪੱਧਰੀ ਅਤੇ ਜ਼ਰਖੇਜ਼ ਹੈ, ਹਰ ਇਕ ਇੰਚ ਉਪਜਾਊ ਹੈ। ਜਿੰਨੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਫੁੱਲ, ਫ਼ਲ਼ ਅਤੇ ਫ਼ਸਲਾਂ ਇਥੇ ਉਗਾਈਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ਓਨੀਆਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਧਰਤੀ ‘ਤੇ ਨਹੀਂ ਉਗਾਈਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ। ਏਨਾ ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਪਾਣੀ ਵੀ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਧਰਤੀ ਦੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਖਿੱਤੇ ਨੂੰ ਨਸੀਬ ਹੋਵੇ। ਹਿਮਾਲਾ ਪਰਬਤ ਤੋਂ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਦਾਖਲ ਹੋਣ ਸਮੇਂ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦਾ ਪਾਣੀ ਹੁੰਦਾ ਵੀ ਬਿਲਕੁਲ ਸਾਫ਼ ਅਤੇ ਸ਼ੁੱਧ ਹੈ। ਇਸ ਧਰਤੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਮੌਸਮ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੰਮ ਧੰਦੇ ਕਰਨ ਲਈ ਅਨੁਕੂਲ ਹਨ। ਗਰਮੀ, ਸਰਦੀ ਅਤੇ ਬਰਸਾਤ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਬਾਰਾਂ ਮਹੀਨੇ, ਤੀਹ ਦਿਨ ਅਤੇ ਚੌਵੀ ਘੰਟੇ ਲੋਕ ਕੰਮ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕ ਮਿਹਨਤੀ ਵੀ ਬਹੁਤ ਹਨ, ਬੁੱਧੀ ਅਤੇ ਸਰੀਕਰ ਤੌਰ ‘ਤੇ ਨਰੋਏ ਹਨ। ਵਿਰਾਸਤੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਅਮੀਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਹਰ ਨਵੇਂ ਖਿਆਲ ਅਤੇ ਟੈਕਨੋਲੋਜੀ ਦਾ ਸਵਾਗਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਪੰਜਾਬੀ ਤਰੱਕੀ ਪਸੰਦ, ਅਗਾਂਹ ਵਧੂ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ ਦੇ ਵੱਡੇ ਸੁਪਨੇ ਲੈਣ ਵਾਲੇ ਹਨ। ਇਥੇ ਹਰ ਕਿੱਤੇ, ਕਲਾ ਅਤੇ ਹੁਨਰ ਦੇ ਜਾਣਕਾਰ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਔਰਤਾਂ ਵੀ ਬੰਦਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਘੱਟ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਨਹੀਂ। ਫਿਰ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਕਿਹੜਾ ਰੋਗ ਹੈ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਪੰਜਾਬ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਸੋਹਣਾ, ਅਮੀਰ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਖਿੱਤਾ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਿਆ? ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਵਧੀਆ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਇਹ ਏਨਾ ਨਿਘਾਰ ਮੁਖੀ ਕਿਉਂ ਹੈ? ਇਸ ਦੇ ਬਾਸ਼ਿੰਦੇ ਆਪਣੀ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਏਨੀ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਛੱਡ ਕੇ ਦੌੜੀ ਕਿਉਂ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ? ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਉਣ ਦੀ ਬਜਾਏ ਪੰਜਾਬੀ ਸਿਰਫ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀ ਜਾਂ ਹਿਜਰਤ ਕਰਨ ਦੀ ਸੋਚਣ ਜੋਗੇ ਕਿਉਂ ਰਹਿ ਗਏ ਹਨ? ਮੈਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸੈਂਕੜੇ ਇੰਜਨੀਅਰਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣਦਾ ਹੋਵਾਂਗਾ ਜੋ ਇਧਰੋਂ ਇੰਜਨੀਰਿੰਗ ਦੀਆਂ ਸਰਕਾਰੀ ਜਾਂ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਨੌਕਰੀਆਂ ਛੱਡ ਕੇ ਅਮਰੀਕਾ, ਕੈਨੇਡਾ, ਅਸਟ੍ਰੇਲੀਆ ਜਾਂ ਹੋਰ ਵਿਕਸਤ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਬਤੌਰ ਇੰਜਨੀਅਰ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਡਾਕਟਰ ਇਧਰੋਂ ਡਾਕਟਰੀ ਛੱਡ ਬਾਹਰਲੇ ਮੁਲਕਾਂ ਦੇ ਕਾਮਯਾਬ ਡਾਕਟਰ ਬਣੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਨੇ ਬਾਹਰਲੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਜਾ ਕੇ ਆਪਣੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿਚ ਨਾਮਣਾ ਖੱਟਿਆ ਹੈ।

ਏਧਰ ਸਕੂਲਾਂ, ਕਾਲਜਾਂ, ਯੁਨੀਵਸਿਟੀਆਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾਉਂਦੇ ਰਹੇ ਕਈ ਅਧਿਆਪਕ ਹੁਣ ਵਿਕਸਤ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ, ਕਾਲਜਾਂ ਜਾਂ ਯੁਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਅਨੇਕਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਗਾਇਕਾਂ, ਸੰਗੀਤਕਾਰਾਂ, ਚਿਤਰਕਾਰਾਂ, ਫੋਟੋਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਮੀਡੀਆ ਕਰਮੀਆਂ ਨੇ ਬਾਹਰਲੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਜਾ ਕੇ ਆਪੋ ਆਪਣੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਨਾਮ ਅਤੇ ਨਾਮਾ ਕਮਾਇਆ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਪੰਜਾਬੀ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਅਮਰੀਕਾ, ਕੈਨੇਡਾ ਅਤੇ ਅਸਟ੍ਰੇਲੀਆ ਵਿਚ ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਖੇਤੀ ਫਾਰਮ ਅਤੇ ਬਾਗ ਹਨ। ਕਈ ਪੰਜਾਬੀ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੇ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਆਪਣੇ ਵਪਾਰਕ ਅਦਾਰੇ ਸਥਾਪਤ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਆਪਣੀ ਜਾਣ ਪਛਾਣ ਦੇ ਆਧਾਰ ‘ਤੇ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਿਸਾਨ, ਵਪਾਰੀ, ਇੰਜਨੀਅਰ, ਡਾਕਟਰ, ਵਿਗਿਆਨੀ, ਯੋਜਨਾਕਾਰ, ਅਧਿਆਪਕ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਿੱਤਾਕਾਰ ਤੇ ਹੁਨਰਮੰਦ ਵਿਕਸਤ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਹਿੱਸਾ ਪਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਦੂਜੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਗੁਣੀ ਕਿੱਤਾਕਾਰ ਅਤੇ ਹੁਨਰਮੰਦ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵਿਕਸਤ ਖਿੱਤਾ ਬਣਾਉਣ ਦੀ ਯੋਗਤਾ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਲਈ ਪੰਜਾਬ ਅੰਦਰ ਲੋੜੀਂਦਾ ਮਹੌਲ ਗੈਰਹਾਜ਼ਰ ਹੈ। ਫਿਰ ਓਹੀ ਸਵਾਲ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਅਜਿਹਾ ਕਿਹੜਾ ਰੋਗ ਲੱਗਿਆ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੇ ਰਸ ਨੂੰ ਚੂਸ ਕੇ ਇਸ ਨੂੰ ਸਾਹ-ਸਤ ਹੀਣ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ?

ਉਪਰਲੇ ਸਵਾਲ ਦਾ ਜਵਾਬ ਤਸਵੀਰ ਦੇ ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਪਿਆ ਹੈ। ਤਸਵੀਰ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਪਾਸਾ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਕੋਈ ਸਿਆਸਤਦਾਨ ਇਧਰ ਆਪਣੀ ਚਲਦੀ ਸਿਆਸਤ ਛੱਡ ਕੇ ਕਦੀ ਕਿਸੇ ਬਾਹਰਲੇ ਮੁਲਕ ਦਾ ਸਿਰਕੱਢ ਸਿਆਸਤਦਾਨ ਨਹੀਂ ਬਣਿਆਂ। ਮੇਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਕੋਈ ਬਿਊਰੋਕਰੈਟ ਆਪਣੀ ਇਧਰਲੀ ਨੌਕਰੀ ਛੱਡ ਕੇ ਕਿਸੇ ਬਾਹਰਲੇ ਮੁਲਕ ਦਾ ਸਿਰਕੱਢ ਨੌਕਰਸ਼ਾਹ ਨਹੀਂ ਬਣਿਆਂ। ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਨਿਕਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡਾ ਕਾਮਯਾਬ ਸਿਆਸਤਦਾਨ ਅਤੇ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਬਿਓਰੋਕਰੇਟ ਵਧੀਆ ਮੁਲਕਾਂ ਦੇ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਦੇ ਨਹੀਂ, ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਓਧਰ ਕੋਈ ਮੰਗ ਨਹੀਂ, ਇਹਨਾਂ ਲਈ ਓਥੇ ਕੋਈ ਥਾਂ ਨਹੀਂ। ਇਹ ਸਿਰਫ ਸਾਡੇ ਜਾਂ ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਪਛੜੇ ਮੁਲਕਾਂ ਵਿਚ ਹੀ ਪਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਦੂਜੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਥਾਪਤ ਸਿਆਸਤਦਾਨ ਅਤੇ ਨੌਕਰਸ਼ਾਹੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਇਸ ਨੂੰ ਗੁਣਾਤਮਕ ਤਰੱਕੀ ਦੇ ਰਸਤੇ ਤੋਰ ਸਕਣ ਦੇ ਯੋਗ ਨਹੀਂ। ਫਿਰ ਵੀ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਪੂਰਾ ਦਬਦਬਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਦਖਲ ਅੰਦਾਜ਼ੀ ਅਤੇ ਚੌਧਰ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਉਦਾਹਰਨਾਂ ਅਤੇ ਚਰਚਾ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਦੋ ਮੋਟੀਆਂ ਅਲਾਮਤਾਂ ਦੀ ਪਛਾਣ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਜਿਹਨਾਂ ਦੀ ਕਾਰਗੁਜ਼ਾਰੀ ਨਾਲ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਉਨਤ, ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਅਤੇ ਸੋਹਣਾ ਖਿੱਤਾ ਹੋਣ ਦੀਆਂ ਸੰਭਾਵਨਾਵਾਂ ਵਾਲੇ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਖੁਦਕੁਸ਼ੀਆਂ ਅਤੇ ਉਜਾੜੇ ਦੀ ਧਰਤੀ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਇਹ ਅਲਾਮਤਾਂ ਕੋਈ ਬਾਹਰੋਂ ਨਹੀਂ ਆਈਆਂ ਸਗੋਂ ਅੰਦਰੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਈਆਂ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਨੇ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਵਧਣ ਫੁੱਲਣ ਦਿੱਤਾ ਹੈ।

ਇਥੇ ਹਰ ਸਰਕਾਰ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਬੁਨਿਆਦੀ ਸਹੂਲਤਾਂ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਉਣ, ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਤਨਖਾਹਾਂ ਦੇਣ ਅਤੇ ਹੋਰ ਜ਼ਰੂਰੀ ਖਰਚੇ ਕਰਨ ਲਈ ਪੈਸੇ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਸਭ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਿੱਤਾਕਾਰਾਂ, ਕਿਰਤੀਆਂ, ਹੁਨਰਮੰਦਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀਆਂ ਉਜਰਤਾਂ ਅਤੇ ਸਹੂਲਤਾਂ ਕਿਸੇ ਗਰੀਬ ਤੋਂ ਗਰੀਬ ਦੇਸ਼ ਵਾਲੀਆਂ ਹਨ। ਪਰ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਮੁੱਖ ਸਿਆਸੀ ਪਾਰਟੀਆਂ ਅਤੇ ਸਿਆਸਤਦਾਨਾਂ ਦਾ ਖਰਚ ਅਮੀਰ ਤੋਂ ਅਮੀਰ ਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਆਰਥਿਕ ਤੰਗੀ ਦੀ **(ਬਾਕੀ ਅਗਲੇ ਪੇਜ਼ ‘ਤੇ)**

ਉਹ ਮੈਨੂੰ ਮਾਰ ਸਕਦੇ ਹਨ,
ਪਰ ਮੇਰੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ
-ਭਗਤ ਸਿੰਘ

ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਕਿਸਾਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਹੋਕਾ

ਨੁਸਰਤ ਅਨਵਰ, ਨਿਊ ਯੌਰਕ

ਹਰ ਉਹ ਵਿਅਕਤੀ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਇਨਸਾਨੀਅਤ ਜ਼ਿੰਦਾ ਹੈ ਜਾਗਦੀ ਜ਼ਮੀਰ ਵਾਲਾ ਹੈ ਉਹ ਕਿਸਾਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਵਿੱਚ ਆਪਣਾ ਬਣਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਭੀ ਇਕ ਕਿਸਾਨ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਤੇ ਆਪਣਾ ਬਣਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਇਹ ਜਾਣਨ ਦੀ ਵੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਕਿ ਲੋਕ ਇਸ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਕੀ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਇਹੀ ਸਮਝਣ ਲਈ ਮੈਂ ਪੂਰੇ ਇੰਡੀਆ ਦਾ ਚੱਕਰ ਲਾਇਆ, ਹਰ ਥਾਂ ਤੇ ਗਿਆ ਜਿੱਥੇ ਲੋਕ ਇਕੱਠੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜਿੱਥੇ ਲੋਕ ਘੁੰਮਣ ਫਿਰਨ ਆਉਂਦੇ ਹਨ, ਜਿੱਥੇ ਲੋਕ ਮੱਥਾ ਟੇਕਣ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਸੰਘਰਸ਼ ਬਾਰੇ ਸਮਝਾਇਆ ਵੀ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਪੁੱਛਿਆ ਬਈ, ਚੱਲ ਰਹੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਬਾਰੇ ਕੀ ਜਾਣਦੇ ਹਨ।

ਬੀਜੇਪੀ ਤੇ ਗੋਦੀ ਮੀਡੀਆ ਵੱਲੋਂ ਜੋ ਦੱਸਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਅਤਿਵਾਦੀ ਮਾਓਵਾਦੀ ਲੋਕ ਹਨ, ਕਿਤੇ ਲੋਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਤੇ ਯਕੀਨ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਕਰ ਰਹੇ। ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਹਾਂ ਕਿ 99% ਲੋਕ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਇਸ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਸਹੀ ਸਮਝਦੇ ਹਨ ਤੇ ਤਾਂ ਹੀ ਤਾਂ ਸਾਡਾ ਸਾਥ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਵੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਹਰ ਇੱਕ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਵਾਂ, ਉਸ ਲਈ ਭਾਵੇਂ ਮੈਨੂੰ ਜਹਾਜ਼ਾਂ, ਬੱਸਾਂ, ਮੈਟਰੋ ਰੇਲਾਂ ਤੇ ਪਾਣੀ ਵਾਲੇ ਜਹਾਜ਼ਾਂ ਦਾ ਹੀ ਸਹਾਰਾ ਕਿਉਂ ਨਾ ਲੈਣਾ ਪਿਆ। ਬਦਨਾਮੀਆਂ ਸਹਿਣੀਆਂ ਪਈਆਂ, ਵਿਰੋਧ ਝੱਲਣੇ ਪਏ।

ਪਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਆਵਾਜ਼ ਬੁਲੰਦ ਰੱਖੀ। ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਹਰ ਕੋਨੇ ਕੋਨੇ ਵਿਚ ਵੱਸਦੇ ਹਨ ।ਤੇ ਉਥੇ ਬੈਠ ਕੇ ਕਿਸਾਨੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ਵਿਚ , ਕਿਉਂਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਅੱਜ ਹਰ ਸੂਬੇ ਹਰ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਜਾਣਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਇਸ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਵੱਡਾ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਪਰਵਾਸੀ ਵੀਰਾਂ ਭੈਣਾਂ ਦਾ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਯੋਗਦਾਨ ਹੈ।

ਹੁਣ ਹਰ ਕੋਈ ਇਹ ਸਮਝ ਚੁੱਕਿਆ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਝੂਠੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਧਰਮਾਂ ਅਤੇ ਜਾਤਾਂ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਲੜਾਉਣ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਵਾਗਡੋਰ ਸੰਭਾਲਣ ਦੀ ਭੁੱਲ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਹਾਂ। ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਐਸੀ ਸਰਕਾਰ ਬਣ ਗਈ ਹੈ ਜੋ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਲੁੱਟ ਲੁੱਟ ਕੇ ਕੁਝ ਕਾਰੋਬਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਅਮੀਰ ਬਣਾਉਣ ਲੱਗੀ ਹੋਈ ਹੈ । ਹੁਣ ਸਾਡੀ ਜਨਤਾ ਮੋਦੀ ਤੇ ਮੋਦੀ ਦੇ ਵਪਾਰੀ ਯਾਰਾਂ ਦੀ ਸਾਰੀਆਂ ਚਾਲਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਦੀ ਹੈ।ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਅੱਜ ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਰੋਹ ਹੈ, ਗੁੱਸਾ ਹੈ। ਜੇ ਹੁਣ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਤਿੰਨੇ ਬਿੱਲ ਵਾਪਸ ਨਾ ਲਏ, ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸਾਰੀ ਦੀ ਸਾਰੀ ਜਨਤਾ ,ਦੇਸ਼ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨਮੰਤਰੀ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਸੜਕਾਂ ਉੱਤੇ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨ ਲੱਗ ਜਾਵੇ। ਕਿਉਂਕਿ ਹੁਣ ਸਾਰੇ ਇਸ ਜੁਮਲੇਬਾਜ਼ ਸਰਕਾਰ ਤੋਂ ਅੱਕੇ ਥੱਕੇ ਪਏ ਹਨ।

ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਅਣਥੱਕ ਪਾਂਧੀ : ਕਾਮਰੇਡ ਕਿਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਬੀਰ

ਸੁਖਦਰਸ਼ਨ ਨੱਤ

ਉੱਘੇ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਆਗੂ ਅਤੇ ਮਾਰਕਸਵਾਦੀ ਸਿਧਾਂਤ ਦੇ ਹਰਮਨ ਪਿਆਰੇ ਅਧਿਆਪਕ-ਪ੍ਰਚਾਰਕ ਸ਼ਹੀਦ ਬਾਬਾ ਬੂਝਾ ਸਿੰਘ ਤੋਂ ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਪਾਹੁਲ ਲੈ ਕੇ 1948-49 ਤੋਂ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਅੰਦੋਲਨ ਨਾਲ਼ ਜੁੜਿਆ ਕਾਮਰੇਡ ਕਿਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਬੀਰ ਅੱਜ ਵੀ ਆਪਣੇ ਚੁਣੇ ਹੋਏ ਇਕ ਨਵਾਂ ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਸਮਾਜ ਸਿਰਜਣ ਦੇ ਜੀਵਨ ਉਦੇਸ਼ ਲਈ ਅਡੋਲ ਨਿਹਚੇ ਨਾਲ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਵਾਂਗ ਸਰਗਰਮ ਹੈ।

ਬੀਤੇ 65 ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਭਾਵੇਂ ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਲਹਿਰ ਨੂੰ ਸਿਧਾਂਤ ਤੇ ਸੰਗਠਨ ਦੋਵਾਂ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿਚ ਵੱਡੀ ਉਥਲ-ਪੁਥਲ ਤੇ ਧੱਕਿਆਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪਿਆ ਹੈ, ਪਰ ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਬੱਧਤਾ ਅਤੇ ਸਮਝਦਾਰੀ ਵਿਚ ਕੋਈ ਦੁਬਿਧਾ ਜਾਂ ਧੁੰਦਲਾਪਣ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਇਹ ਪ੍ਰਤੀਬੱਧਤਾ ਕੋਈ ਸ਼ਰਧਾਮੂਲਕ ਵੀ ਨਹੀਂ, ਬਲਕਿ ਠੋਸ ਤਰਕਾਂ ਤੇ ਦਲੀਲਾਂ ‘ਤੇ ਆਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਸ ਦਾ ਬੁਨਿਆਦੀ ਸਮਰਪਣ ਆਪਣੀ ਮੰਜ਼ਿਲ ‘ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਮਜ਼ਦੂਰ-ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਜਮਾਤੀ ਜਦੋਜਹਿਦ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈ, ਨਾ ਕਿ ਇਨਕਲਾਬੀ ਜਦੋਜਹਿਦ ਦੇ ਸੰਦ ਭਾਵ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਪਾਰਟੀ ਪ੍ਰਤੀ ।ਇਸੇ ਲਈ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਜਿਸ ਵੀ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਪਾਰਟੀ ਨੇ ਇਨਕਲਾਬੀ ਜਦੋਜਹਿਦ ਵਲੋਂ ਮੁੱਖ ਮੋੜਿਆ, ਤਾਂ ਅਨੇਕਾਂ ਹੋਰਨਾਂ ਵਾਂਗ ਉਸ ਪਾਰਟੀ ਨਾਲ ਜਜ਼ਬਾਤੀ ਤੌਰ ’ਤੇ ‘ਮਾਂ ਪਾਰਟੀ ਮੰਨ ਕੇ ਚਿੰਬੜੇ ਰਹਿਣ ਦੀ ਬਜਾਏ ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਬਿਨਾਂ ਹਿਚਕ ਉਸ ਨਵੀਂ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਪਾਰਟੀ ਨਾਲ ਜਾ ਜੁੜੇ, ਜੋ ਜਮਾਤੀ ਜਦੋਜਹਿਦ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਉਣ ਦੇ ਯਤਨ ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ। ਇਸੇ ਦਾ ਨਤੀਜਾ ਹੈ ਕਿ ਲਾਲ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਪਾਰਟੀ ਤੋਂ ਆਰੰਭ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਕਿਰਪਾਲ ਬੀਰ ਸੀ. ਪੀ. ਆਈ., ਸੀ. ਪੀ. ਆਈ. (ਐਮ.) ਤੇ ਐਮ. ਸੀ. ਪੀ. ਆਈ. ਵਿਚੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੋਇਆ 1995 ਵਿਚ ਨਕਸਲਵਾਦੀ ਧਾਰਾ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ ਸੀ. ਪੀ. ਆਈ. (ਐਮ. ਐਲ.) ਲਿਬਰੇਸ਼ਨ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ ਅਤੇ ਕਈ ਸਾਲ ਉਸ ਨੇ ਇਸ ਦੀ ਮਾਨਸਾ ਜ਼ਿਲਾ ਕਮੇਟੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇ ਨਿਭਾਈ।

ਉਂਝ ਆਪਣੀ ਸੋਚ ਵਿਚਲੇ ਖੁੱਲ੍ਹੇਪਣ ਅਤੇ ਮਾਲਵੇ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡ ਉਮਰ ਦੇ ਚੰਦ ਚੋਣਵੇਂ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਕਾਰਕੁੰਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਇਲਾਕੇ ਦੀ ਆਮ ਜਨਤਾ ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਪਾਰਟੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦੀ ਬਜਾਏ, ਸਮੁੱਚੀ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਲਹਿਰ ਦੇ ਨੁਮਾਇੰਦੇ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਹੀ ਦੇਖਦੀ ਹੈ। ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਉਤਸ਼ਾਹ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਇਕ ਜ਼ਿੰਦਾਦਿਲ ਅਤੇ ਖ਼ੁਸ਼ਦਿਲ ਇਨਸਾਨ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਸ ਦੇ ਮੂਹੋਂ ਕਦੇ ਸ਼ਿਕਾਇਤੀ ਜਾਂ ਢਹਿੰਦੀ ਕਲਾ ਵਾਲੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਨਹੀਂ ਸੁਣੀਆਂ। ਸਦਾ ਹੀ ਚੜ੍ਹਦੀਕਲਾ ਵਿਚ ਅਤੇ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਨਵੇਂ ਕੰਮਾਂ ਦੀਆਂ ਸਕੀਮਾਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਕੁਝ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਤੱਕ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਤੇ ਸਿਆਸੀ ਰੁਝੇਵਿਆਂ, ਅਤੇ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਨਿੱਜੀ ਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕੰਮਾਂਕਾਰਾਂ ਲਈ ਪਿੰਡ ਬੀਰ ਖੁਰਦ ਤੋਂ 25-30 ਕਿਲੋਮੀਟਰ ਦੂਰ ਪੈਂਦੇ ਸ਼ਹਿਰ ਮਾਨਸਾ ਤੱਕ ਸਾਇਕਲ ਤੇ ਆਉਣਾ-ਜਾਣਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਆਮ ਗੱਲ ਸੀ। ਪਿੰਡ, ਭੀਖੀ ਅਤੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚਲੇ ਹਰ ਅਹਿਮ ਸਾਂਝੇ ਸਮਾਜਿੰਕ ਤੇ ਰਾਜਸੀ ਇਕੱਠ ਵਿਚ ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਤੁਹਾਨੂੰ ਲਾਜ਼ਮੀ ਹਾਜ਼ਰ ਮਿਲਣਗੇ ਅਤੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਮੌਜੂਦਗੀ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਦੀ ਪੂਰੀ ਛਾਪ ਵੀ ਛੱਡੇਗੀ। ਸਧਾਰਨ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ-ਕਿਸਾਨਾਂ, ਔਰਤਾਂ, ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਦੁਕਾਨਦਾਰਾਂ, ਮੁਲਾਜ਼ਮਾਂ, ਵਕੀਲਾਂ, ਪ੍ਰੋਫ਼ੈਸਰਾਂ, ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਤੱਕ ਕਿਰਪਾਲ ਬੀਰ ਦੀਆਂ ਲਿਹਾਜ਼ਾਂ ਹਨ। ਉਸ ਕੋਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲ ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਸਿਆਸੀ ਵਿਚਾਰ ਚਰਚਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸਦਾ ਭਰਪੂਰ ਤੇ ਢੁੱਕਵਾਂ ਮਸਾਲਾ ਮੌਜੂਦ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਚਿੱਟੀ ਜਾਂ ਫਿੱਕੀ ਪੱਗ, ਸਾਦਾ ਕੁਰਤੇ-ਪਜਾਮੇ ਅਤੇ ਝੋਲੇ ਵਾਲੇ ਇਸ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਵਰਗੇ ਹਿੰਮਤੀ ਬਾਬੇ ਨੂੰ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਲੋਕ, ਮੌਸਮ ਬਾਰੇ ਸਹੀ ਭਵਿੱਖਬਾਣੀ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਪੇਂਡੂ ਵਿਗਿਆਨੀ ਜਾਂ ਮੌਸਮ ਦੇ ਮਾਹਿਰ ਵਜੋਂ ਹੀ ਜਾਣਦੇ ਹਨ। ਆਮ ਲੋਕ - ਖਾਸ ਕਰ ਕਿਸਾਨ ਅਕਸਰ ਉਸ ਦੀ ਇਸ ਮੁਹਾਰਤ ਦਾ ਲਾਹਾ ਵੀ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਇਨਕਲਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਪੜ੍ਹਨਾ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣਾ ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਦੀ ਇਕ ਹੋਰ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਦਿਲਚਸਪੀ ਅਤੇ ਸਰਗਰਮੀ ਹੈ। ਪਾਰਟੀ ਦੇ ਰਸਾਲਿਆਂ ਤੋਂ ਲੋਕ ਸਾਹਿਤ, ਸਿਧਾਂਤ, ਇਤਿਹਾਸ ਜਮੀਨ ਦੀ ਪੈਮਾਇਸ਼ ਅਤੇ ਆਮ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਤ ਜੋ ਵੀ ਕਿਤਾਬ ਕਾਮਰੇਡ ਨੂੰ ਲਾਹੇਵੰਦ ਜਾਪੇ , ਉਸ ਨੂੰ ਖ਼ੁਦ ਪੜ੍ਹਨਾ ਅਤੇ ਫੇਰ ਅਨੇਕਾਂ ਹੋਰਨਾਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣਾ ਉਸ ਦੀ ਇਨਕਲਾਬੀ ਸਰਗਰਮੀ ਦਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਿੱਸਾ ਹੈ, ਪਰ ਉਹ ਖੁਦ ਬੜੀ ਦੇਰ ਤੋਂ ਗਿਆਨੀ ਹੀਰਾ ਸਿੰਘ ਦਰਦ ਲਿਖਤ ਪੁਸਤਕ “ਪੰਥ, ਧਰਮ ਤੇ ਰਾਜਨੀਤੀ” ਆਪਣੇ ਮੁੜ ਪੜਨ ਲਈ ਲੱਭ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਜੋ ਉਸ ਨੂੰ ਅੱਜ ਤੱਕ ਨਹੀਂ ਮਿਲੀ। ਇਸ ਚੰਗੀ ਪੁਸਤਕ ਦੇ ਨਾ ਮਿਲਣ ਦਾ ਉਸ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਝੋਰਾ ਹੈ।

“ਅਸੀਂ ਹਾਰਨਾ ਜ਼ਾਲਮੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਨਹੀਂ, ਸਦਾ ਜਿੱਤ ਦੇ ਵਿਚ ਯਕੀਨ ਸਾਡਾ” ਉਸ ਦਾ ਉਹ ਹਰਮਨ ਪਿਆਰਾ ਸ਼ੇਅਰ ਹੈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਉਹ ਕਰੀਬ ਆਪਣ ਹਰ ਭਾਸ਼ਣ ਦੇ ਅਖੀਰ ਵਿੱਚ ਜ਼ਰੂਰ ਦੁਹਰਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਪੈਪਸੂ ਮੁਜ਼ਾਰਾ ਲਹਿਰ ਦੌਰਾਨ ਵਾਪਰੇ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਗੋਲੀਕਾਂਡ, ਬਠਿੰਡੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਸੰਗਰਾਮੀਆਂ ਅਤੇ ਫ਼ੌਜੀ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਬਾਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਭਰਪੂਰ ਕਿਤਾਬਚੇ ਲਿਖਣ ਅਤੇ ‘ਮਾਲਵਾ ਇਤਿਹਾਸ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ’ ਚਲਾਉਣ ਵਾਲੇ ਮਰਹੂਮ ਕਾਮਰੇਡ ਸਰਬਣ ਸਿੰਘ ਬੀਰ ਦਾ ਛੋਟਾ ਭਰਾ ਹੈ ਅਤੇ ਖ਼ੁਦ ਵੀ ਇਲਾਕੇ ਦੀਆਂ ਇਨਕਲਾਬੀ ਲਹਿਰਾਂ ਅਤੇ ਅਹਿਮ ਸਿਆਸੀ ਘਟਨਾਵਾਂ ਦੇ ਮੌਖਿਕ ਇਤਿਹਾਸ ਦਾ ਇਕ ਅਹਿਮ ਸਰੋਤ ਹੈ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਅਨੇਕਾਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਤੇ ਵਰਤਾਰਿਆਂ ਬਾਰੇ ਮੌਕੇ ਦੇ ਗਵਾਹ ਵਜੋਂ ਪੂਰਾ ਵਿਸਥਾਰ ਉਸ ਦੇ ਮੂੰਹੋਂ ਕਦੋਂ ਵੀ ਪੂਰੇ ਕਥਾ ਰਸ ਤੇ ਵੇਰਵਿਆਂ ਸਹਿਤ ਸੁਣਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਐਸੇ ਕਰਮਯੋਗੀ ਇਨਸਾਨ ਦੇ ਦਹਾਕਿਆਂ ਲੰਬੇ ਸਰਗਰਮ ਰਾਜਸੀ ਜੀਵਨ ਬਾਰੇ ਪੁਸਤਕ ਤਿਆਰ ਕਰਕੇ ਡਾ. ਬੀ. ਅਲੈਕਸੇਈ ਨੇ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਉਸ ਨਾਲ਼ ਈਰਖਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਕਾਮਰੇਡ ਬੀਰ ਦੀ ਜੀਵਨੀ ਤਾਂ ਮੈਂ ਲਿਖਣੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਕਈ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਇਸ ‘ਤੇ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਵੀ ਕੀਤਾ ਸੀ, ਪਰ ਮੈਂ ਸਿਆਸੀ-ਜਥੇਬੰਦਕ ਰੁਝੇਵਿਆਂ ਵਿਚ ਫਸਿਆ ਰਿਹਾ ਅਤੇ ਸਿਰੜੀ ਖੋਜ-ਕਰਤਾ ਅਲੈਕਸੇਈ ਬਾਜ਼ੀ ਲੈ ਗਿਆ।

Scan this for PDF

We are thankful to Rishabh, Jasleen Lally, Khushveer Singh and Suchetna Singh for editing transcription and translation support.

WWW.TROLLEYTIMES.ONLINE
TWITTER@ TIMESTROLLEY
FACEBOOK@ TROLLEYTIMES
TIMESTROLLEY@GMAIL.COM
INSTAGRAM@ TROLLEY_TIMES_OFFICIAL
EVERYONE IS FREE TO PRINT THIS PDF WITHOUT MAKING ANY CHANGES.

ਸਾਬਕਾ ਫੌਜੀ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਦਾ ਹੌਂਸਲਾ

ਸਿੰਘੂ ਬਾਰਡਰ ਤੋਂ ਇਕ ਅੰਦੋਲਨਜੀਵੀ

ਤਿੰਨ ਖੇਤੀ ਆਰਡੀਨੈਂਸਾਂ ਨੇ ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਲਹਿਰ ਖੜੀ ਕੀਤੀ ਜੋ ਦਿਨੋਂ ਦਿਨ ਨਵੇਂ ਕੀਰਤੀਮਾਨ ਬਣਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਹਰ ਇਕ ਅੰਦੋਲਨ ਵਿਚੋਂ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਲੀਡਰਾਂ ਦਾ ਜਨਮ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪਰਦੇ ਦੇ ਉਤੇ ਇਹ ਲੀਡਰ ਆਪਣੀ ਭੂਮਿਕਾ ਅਤੇ ਜੁੰਮੇਵਾਰੀ ਬਾਖੂਬੀ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਨੇ। ਇਹਨਾਂ ਸਬ ਕੁਝ ਹੋਣ ਪਿੱਛੇ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਵਰਗੀ ਰੀਡ ਦੀ ਹੱਡੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਸਬ ਨੂੰ ਜਿਉਂਦਾ ਰੱਖਦੀ ਹੈ।

ਪਟਿਆਲਾ ਦੇ ਝੰਡੀ ਪਿੰਡ ਦਾ 47 ਸਾਲਾਂ ਮੇਜਰ ਖਾਨ 26 ਨਵੰਬਰ ਤੋਂ ਹੀ ਸਿੰਘੂ ਮੋਰਚੇ ਤੇ ਡਟਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ।ਰੋਜ ਦੇ ਰੁਟੀਨ ਵਾਂਗ 15 ਮਾਰਚ ਨੂੰ ਵੀ ਜਦ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡ ਦਿਆਂ ਟਰਾਲੀਆਂ ਵਲ ਨੂੰ ਗਏ ਤੇ ਸਾਮਣੇ ਪਿੰਡ ਵਾਲੇ ਇਕ ਕੇਕ ਲੈਕੇ ਬੜੇ ਜੋਸ਼ ਨਾਲ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਦਾ ਸੁਆਗਤ ਕਰਦੇ ਹੈ। ਉਸ ਕੇਕ ਤੇ ਲਿਖਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ “ਕਿਸਾਨ ਮਜਦੂਰ ਏਕਤਾ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ” “ਹੈਪੀ ਬਰਡੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੇਜਰ ਖਾਨ”.

ਜਿਸ ਇਨਸਾਨ ਕੋਲ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਨਾਂਅ ਤੇ ਦੋ ਮਰਲੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਉਹ ਇਸ ਅੰਦੋਲਨ ਦੀ ਜੀ ਜਾਨ ਤੋਂ ਹਿਮਾਇਤ ਕਰਦਾ ਨਹੀਂ ਥੱਕਦਾ। ਜਿਸ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਇਕ ਮੁਸਲਮਾਨ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਪਾਣੀ ਤਕ ਨਹੀਂ ਪੀਣ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ, ਉਸ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਦਾ ਇਸ ਅੰਦੋਲਨ ਵਿੱਚ ਵੱਧ ਕੇ ਹਿੱਸਾ ਪਾਉਣਾ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਸੀਧੀ ਚੁਣੌਤੀ ਹੈ।

ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਕਿਸਾਨ ਯੂਨੀਅਨ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਝੰਡੀ ਇਕਾਈ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਨੇ ਆਵਦੇ ਘਰ ਨੂੰ ਸੀਧਾ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ ਹੋਇਆ ਕਿ ਉਹਦੇ ਲਈ ਪਰਿਵਾਰ ਤੋਂ ਕਿਤੇ ਹੀ ਵੱਧ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਮੇਜਰ ਦੀ ਭਾਣਜੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਸੀ, ਮੇਜਰ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਤੇ ਕੁਛ ਸ਼ਰਾਰਤੀ ਅਨਸਰ ਵਲੋਂ ਹਮਲਾ ਹੋਇਆ ਪਰ ਇਸ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਨੂੰ ਦਿੱਲੀ ਮੋਰਚੇ ਦੀ ਫਿਕਰ ਹੈ। ਉਹ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਤਾਂ ਰਹਿੰਦੇ ਹੀ ਨੇ ਪਰ ਨਾਲ ਦੇ ਨਾਲ ਕਿਸਾਨ ਆਗੂਆ ਦਾ ਵੀ ਹੌਂਸਲਾ ਵਧਾਉਂਦੇ ਨੇ। ਕਿਸਾਨ ਆਗੂ ਡਾ ਦਰਸ਼ਨ ਪਾਲ ਅਤੇ ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਦਿਨ ਵਿੱਚ ਘਟੋਂ ਘਟ ਦੋ ਵਾਰੀ ਤਾਂ ਜ਼ਰੂਰ ਫੋਨ ਕਰਕੇ ਜਾਂ ਮਿਲਕੇ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਦੀ ਸਲਾਹ ਲੈਂਦੇ ਨੇ ਜਾਂ ਹਾਲ ਪੁੱਛਦੇ ਨੇ। ਕਰਨਾਟਕ ਤੋਂ ਕਿਸਾਨ ਆਗੂ ਕਵਿਤਾ ਕੁਰੁਗੁੰਟੀ ਮੇਜਰ ਦੀ ਸਿਫਤਾਂ ਕਰਦੀ ਨਹੀਂ ਥੱਕਦੀ। 15 ਮਾਰਚ 2021 ਨੂੰ ਮੇਜਰ ਖਾਨ 47 ਸਾਲਾਂ ਦਾ ਹੋ ਗਿਆ। ਮੇਜਰ ਖਾਨ 1993 ਵਿੱਚ ਇੰਡਿਯਨ ਆਰਮੀ ਵਿੱਚ ਭਰਤੀ ਹੋਏ। ਫੌਜ਼ ਵਿੱਚ ਵੀ ਮਿਲਣਸਾਰ ਇਸਨਾਨ ਵਜੋਂ ਸਾਥੀਆਂ ਅਤੇ ਸੀਨੀਅਰ ਅਫਸਰਾਂ ਵਲੋਂ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰ ਮਿਲਿਆ। ਕਰੀਬ 24 ਸਾਲ ਫੌਜ਼ ਚ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ 2016 ਵਿੱਚ ਰਿਟਾਇਰ ਹੋਏ। ਨਾ ਸਿਰਫ ਸਿੰਘੁ ਬਾਰਡਰ ਤੇ, ਬਲਕਿ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਕਿਸਾਨੀ ਲਹਿਰ ਲਈ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਸਮਰਪਿਤ ਕਰ ਚੁਕੇ ਹਨ। ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ ਜਦ ਕਿਸਾਨ ਆਗੂ ਪਿੰਡਾਂ-ਮੋਟਰਾਂ ਤੇ ਜਾ ਜਾ ਕੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਵਾਰੇ ਦੱਸਿਆ ਕਰਦੇ ਸੀ ਤਾਂ ਵੀ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਦਿਨ ਰਾਤ ਆਪਣੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦਿੰਦੇ ਰਹੇ।

ਮੇਜਰ ਦੀ ਇਕ ਗੱਲ ਹੋਰ ਵੱਖਰੀ ਹੈ। ਉਹ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਨੂੰ ਛੋਟਾ ਵੱਡਾ ਨਹੀਂ ਮੰਨਦੇ। ਜੋ ਕੰਮ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰੀ ਜਾਪਦਾ ਉਸ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਦੇਰੀ ਤੋਂ ਹੀ ਜੁਟ ਜਾਂਦੇ ਨੇ। ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨ ਲਈ ਤਿੰਨ ਮਹੀਨੇ ਡਰਾਈਵਰ ਬਣੇ ਰਹੇ। ਸਿੰਘੁ ਮੋਰਚੇ ਤੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਖਾਨ ਪੀਣ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਤੌਰ ਤੇ ਖਿਆਲ ਰੱਖਦੇ ਨੇ। ਜੋ ਵੀ ਕਿਸਾਨ ਮੇਜਰ ਦੇ ਸੰਪਰਕ ਵਿੱਚ ਆਇਆ ਉਹ ਭੁੱਖਾ ਨਹੀਂ ਸੌਂ ਸਕਦਾ। ਉਹ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਮੈਲੇ ਕੱਪੜੇ ਵੇਖ ਧਵਾਉਣ ਦੀ ਜਿਦ ਕਰਦਾ। ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਇਕੋ ਹੀ ਗੱਲ ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਰਕਾਰ ਨਾਲ ਲੜਨ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਕਸਰ ਨਾ ਛੱਡੋ, ਤੁਆਡੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਕੋਈ ਕਸਰ ਨਹੀਂ ਛੱਡਾਂਗਾ।

ਅੰਦੋਲਨ ਖੜਾ ਕਰਨਾ ਲੀਡਰਾਂ ਦਾ ਕੰਮ ਜ਼ਰੂਰ ਹੈ ਪਰ ਅੰਦੋਲਨ ਨੂੰ ਜਿਉਂਦਾ ਰੱਖਣਾ ਮੇਜਰ ਖਾਨ ਵਰਗੇ ਸੂਰਮਿਆਂ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ। ਇਹ ਕਿਸਾਨੀ ਅੰਦੋਲਨ ਇਸ ਕਰਕੇ ਹੀ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਆਵਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਦਾਂਅ ਤੇ ਲਾਈ ਹੈ। ਅਪਣਾ ਘਰ ਬਾਰ ਛੱਡ ਕੇ, ਇਕ ਬੇਜਮੀਨਾ ਮੁਸਲਮਾਨ ਬੰਦਾ ਜਦ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚਾਲੇ ਆਕੇ ਕਿਸਾਨ ਮਜਦੂਰ ਏਕਤਾ ਦਾ ਨਾਅਰਾ ਲਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਹੌਂਸਲਾ ਵਧਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਹਿਲਦੀਆਂ ਨੇ, ਤਾਂ ਇਹ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਜਨ ਅੰਦੋਲਨ ਬਣਦਾ ਹੈ।

(ਬਾਕੀ ਪਿਛਲੇ ਪੇਜ਼ ‘ਤੇ) ਦੁਹਾਈ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਅਹਿਸਾਸ ਕਰਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡਾ ਦੇਸ਼ ਜਾਂ ਸੂਬਾ ਗਰੀਬ ਹੈ। ਫਿਰ ਸਿਆਸੀ ਪਾਰਟੀਆਂ ਜਾਂ ਸਿਆਸੀ ਲੋਕਾਂ ਕੋਲ ਚੋਣਾਂ ਲਈ ਏਨਾ ਪੈਸਾ ਕਿਥੋਂ, ਕਿਵੇਂ ਅਤੇ ਕਿਉਂ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ? ਚੋਣਾਂ ਲੜ ਰਹੇ ਉਮੀਦਵਾਰਾਂ ਅਤੇ ਪਾਰਟੀਆਂ ਵਲੋਂ ਹਰੇਕ ਪਾਰਲੀਮਾਨੀ ਸਭਾ ਸੀਟ ‘ਤੇ ਤਕਰੀਬਨ ਇਕ-ਇਕ ਅਰਬ ਰੁਪੱਈਆ ਖਰਚਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿਆਸਤ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਪੇਸ਼ ਪਾ ਲਈ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਮਹਿੰਗੀ ਪੈ ਰਹੀ ਹੈ। ਜਿਥੇ ਇਕ ਪੋਸਟਰ ਜਾਂ ਬੈਨਰ ਨਾਲ ਸਰ ਸਕਦਾ ਉਥੇ ਸੌ ਸੌ ਲਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹਾ ਕਰਕੇ ਸਹੀ ਸੋਚ ਵਾਲੇ ਸਿਆਣੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਤੰਕਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿਚ ਆਉਣ ਦੀ ਸੋਚ ਵੀ ਨਾ ਸਕਣ। ਵੱਡੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਹੋਰਡਿੰਗ ਲਾ ਕੇ ਸਿਆਸੀ ਬਦਮਾਸ਼ੀ ਦਾ ਪ੍ਰਗਟਾਵਾ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਥਾਪਤ ਸਿਆਸੀ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਪਾਵਰ ਹਥਿਆਉਣ ਲਈ ਪੈਸਾ ਖਰਚਣਾ ਅਤੇ ਪੈਸੇ ‘ਕੱਠੇ ਕਰਨ ਲਈ ਪਾਵਰ ਹਥਿਆਉਣਾ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਕੋਈ ਸਿਧਾਂਤਕ ਜਾਂ ਨੀਤੀਗਤ ਵਖਰੇਵਾਂ ਨਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਇਹ ਆਪਣੀ ਸਹੂਲਤ ਲਈ ਬੜੇ ਆਰਾਮ ਨਾਲ ਪਾਰਟੀ ਬਦਲ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਉਪਰੋਂ ਵਿਰੋਧੀ ਲਗਦੀਆਂ ਪਾਰਟੀਆਂ ਅੰਦਰੋਂ ਇਕ ਦੂਜੀ ਨਾਲ ਸੀਟਾਂ ਦਾ ਦੇਣ ਲੈਣ ਵੀ ਕਰ ਲੈਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਲੋਕ ਬੇਦਿਲੀ ਨਾਲ਼ ਕਹਿ ਛੱਡਦੇ ਹਨ, ‘ਸਾਰੇ ਇਕੋ ਜਿਹੇ ਹਨ’ ਜਾਂ ‘ਸਭ ਰਲੇ ਹੋਏ ਹਨ’। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੰਜਾਬ ਜਾਂ ਦੇਸ਼ ਅੰਦਰ ਵਧੀ ਫੁੱਲੀ ਸਿਆਸਤ ਦਾ ਰੋਗ ਇਸ ਦੀ ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਸਿਹਤ ਦਾ ਦੁਸ਼ਮਣ ਬਣਿਆਂ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਅਸਲ ਆਗੂਆਂ ਨੇ ਦੇਖਣਾ ਹੁੰਦਾ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਕਿਸ ਗੱਲ ਵਿਚ ਹੈ, ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਚੰਗੇ, ਸਿਆਣੇ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਕਿਵੇਂ ਬਣਾਉਣਾ ਹੈ। ਉਹ ਆਪ ਆਚਰਨ, ਵਿਹਾਰ ਅਤੇ ਕਾਨੂੰਨ ਪਾਲਣਾ ਦੇ ਉੱਚੇ ਮਿਆਰ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਲਈ ਉਦਾਹਰਣ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਅਜਿਹੇ ਆਗੂਆਂ ਦਾ ਕਾਲ਼ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਵਾਂਗ ਸਾਡਾ ਸਿਆਸਤਦਾਨ ਆਪਣਾ ਵਕਤੀ ਲਾਭ ਦੇਖਦਾ ਹੈ। ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਬੇਵਕੂਫ ਅਤੇ ਉਜੱਡ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਰਾਜਨੀਤੀ ਦਾ ਕੰਮ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਸੁਲਝਾਉਣਾ ਜਾਂ ਮੁੱਦਿਆਂ ਨੂੰ ਨਜਿੱਠਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਸਾਡੇ ਹਰ ਪੱਧਰ ਦੇ ਮਸਲੇ ਵਧੀ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਪੰਜਾਬ ਸਾਹ ਲੈਣ ਯੋਗ ਸਾਫ਼ ਹਵਾ ਅਤੇ ਪੀਣ ਯੋਗ ਸ਼ੁੱਧ ਪਾਣੀ ਵਰਗੀਆਂ ਬੁਨਿਆਦੀ ਲੋੜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਤੋਂ ਹੀ ਵਾਂਝਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਸਥਾਪਤ ਸਿਆਸਤਦਾਨ ਔਸਤਨ ਹਰ ਸਵਾ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਚੋਣ ਲਈ ਜਿੰਨਾ ਪੈਸਾ, ਸਮਾਂ, ਸ਼ਕਤੀ, ਰਸੂਖ ਅਤੇ ਦਿਮਾਗ ਵਰਤਦੇ ਹਨ ਜੇ ਓਨਾ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਂ ਨੂੰ ਨਜਿੱਠਣ ਲਈ ਲਾਉਣ ਤਾਂ ਸਵਾ ਸਾਲ ਦੇ ਅੰਦਰ ਪੰਜਾਬ ਮੋਟੀਆਂ ਮੋਟੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਜਿਸ ਭਾਂਤ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਨੇ ਹੁਣ ਤੱਕ ਵਧਣ ਫੁੱਲਣ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਗਲ਼ ਪਾ ਲਿਆ ਹੈ ਇਹ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਸਮੱਸਿਆ ਬਣ ਗਈ ਹੈ। ਵੋਟਾਂ ਦੀ ‘ਮਜਬੂਰੀ’ ਕਾਰਨ ਇਹ ਰਾਜਨੀਤੀ ਜਨਤਕ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨੂੰ ਸੁਚਾਰੂ ਰੱਖਣ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਨਿਯਮਾ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਲਈ ਅੜਿਕਾ ਬਣਦੀ ਹੈ। ਅੜਿਕਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਣਦੀ ਸਗੋਂ ਕਾਨੂੰਨ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੇ ਅਧੀਨ ਕਰਨ ਵਿਚ ਲੱਗੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਪੁਲਿਸ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਿਚ ਦਖਲ ਦੇ ਕੇ ਉਸਦਾ ਅਪਰਾਧੀਕਰਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਅਧੀਨ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਜ਼ੋਰਸ਼ੋਰ ਅਤੇ ਅਸਰਦਾਰ ਢੰਗ ਨਾਲ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਸਿਆਸਤਦਾਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਟੱਬਰ ਨਾਲ ਲਾਉਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਨਤੀਜੇ ਵਜੋਂ ਸਿਆਸਤ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ ਪਿਆਰ ਜਾਂ ਲੋਕ ਭਲਾਈ ਦੀ ਜਗ੍ਹਾ ਪਰਿਵਾਰਵਾਦ ਦਾ ਬੋਲਬਾਲਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ।

ਘੋੜੀ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ

ਮੇਲਾ ਰਾਮ ਤਾਇਰ

ਆਓ ਨੀ ਭੈਣਾਂ ਰਲ ਘੋੜੀਆਂ ਗਾਵੀਏ
ਜੰਞ ਤੇ ਹੋਈ ਏ ਤਿਆਰ ਵੇ ਹਾਂ
ਮੌਤ ਲਾੜੀ ਨੂੰ ਵਰਨਾਵਣ ਚੱਲਿਆ
ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਸਰਦਾਰ ਵੇ ਹਾਂ
ਆਓ ਨੀ ਭੈਣਾਂ

ਰਾਜਗੁਰੂ, ਸੁਖਦੇਵ ਸਰਬਾਲੇ ਬੈਠੇ
ਦੋਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਵੇ ਹਾਂ
ਹਰੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਤੇਰਾ ਸਾਂਢੂ ਓ ਲਾੜਿਆ
ਦੋਵੇਂ ਤੇ ਢੁੱਕ ਇੱਕੋ ਵਾਰ ਵੇ ਹਾਂ
ਆਓ ਨੀ ਭੈਣਾਂ

ਕਾਲੀਆ ਪੁਸ਼ਾਕਾਂ ਪਾ ਕੇ ਜੰਞ ਜੂ ਤੁਰ ਪਈ
‘ਤਾਇਰ’ ਵੀ ਹੋਏ ਨੇ ਤਿਆਰ ਵੇ ਹਾਂ

ਪੈਪਸੂ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸਕ "ਮੁਜਾਰਾ ਘੋਲ"

ਹਰਦੇਵ ਸਿੰਘ ਅਰਸ਼ੀ

ਪੈਪਸੂ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਮੁਜਾਰਾ ਲਹਿਰ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ ਸਾਥੀਆਂ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ 19 ਮਾਰਚ ਨੂੰ ਹਰ ਸਾਲ ਸ਼ਹੀਦੀ ਕਾਨਫਰੰਸ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮੁਜਾਰਾ ਘੋਲ ਦੇ ਕੇਂਦਰ ਬਿੰਦੂ ਪਿੰਡ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਵਿਖੇ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਘੋਲ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ 72ਵਾਂ ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿਵਸ, ਇਸੇ ਦਿਨ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬਾਰਡਰਾਂ ਤੇ ਇਨਕਲਾਬੀ ਜੋਸ਼ ਤੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨਾਲ਼ ਮਨਾਏ ਜਾਣ ਦਾ ਸ਼ਲਾਘਾਯੋਗ ਫੈਸਲਾ ਸੰਯੁਕਤ ਕਿਸਾਨ ਮੋਰਚਾ ਵਲੋਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਹ ਹਥਿਆਰਬੰਦ ਘੋਲ ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਸੁਤੰਤਰ, ਜੰਗੀਰ ਸਿੰਘ ਜੋਗਾ, ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ ਤੇ ਛੱਜੂਮਲ ਵੈਦ ਵਰਗੇ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਸੁਚੱਜੀ ਅਗਵਾਈ ਵਿਚ ਲੜਿਆ ਗਿਆ। ਹੁਣ ਤਕ ਕਿਸਾਨੀ ਘੋਲਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਹ ਅੰਦੋਲਨ ਵਿਲੱਖਣ ਹੈ, ਜਿਸਨੇ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਜਾਨੀ ਨੁਕਸਾਨ ਸਹਿੰਦਿਆ 16 ਲੱਖ ਕਿੱਲੇ ਤੋਂ ਵਧ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਮਾਲਕ ਬਣਾਇਆ ਹੈ।

ਮੁਗਲ ਰਾਜ ਦੇ ਆਖਰੀ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਪਟਿਆਲਾ, ਜੀਂਦ ਤੇ ਨਾਭਾ, ਕਪੂਰਥਲਾ, ਮਲੇਰਕੋਟਲਾ, ਨਾਲਾਗੜ੍ਹ ਤੇ ਕਲਸੀਆ ਰਿਆਸਤਾਂ ਕਾਇਮ ਹੋਈਆਂ ਸਨ। ਅੰਗਰੇਜ ਬਸਤਾਨਾਂ ਦਾ ਰਾਜ ਆਉਣ ਤੇ ਰਿਆਸਤਾਂ ਦੇ ਰਾਜਿਆਂ ਨੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਕੀਮਤੀ ਨਜ਼ਰਾਨੇ ਭੇਂਟ ਕਰਨ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਵਿਰੁਧ ਉਠੀਆਂ ਬਗਾਵਤਾਂ ਦਬਾਉਣ ਲਈ ਆਪਣੀਆਂ ਫੌਜਾਂ ਭੇਜ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਕੀਤੀ। 1849 ਵਿੱਚ ਸਿੱਖ ਫੌਜਾਂ ਦੇ ਹਾਰ ਜਾਣ ਉਪਰੰਤ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਤੇ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰ ਲਿਆ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ 1860 ਦੇ ਬੰਦੋਬਸ਼ਤ ਰਾਹੀਂ 12 ਸਾਲਾਂ ਹਲਵਾਹਕ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕੇ ਮਾਲਕੀ ਹੱਕ ਦਿਤੇ। ਆਪਣੇ ਮਦਦਗਾਰ, ਰਿਆਸਤੀ ਅਹਿਲਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡੀਆਂ ਜਗੀਰਾਂ ਨਾਲ ਨਵਾਜਿਆ ਗਿਆ। ਰਿਆਸਤਾਂ ਦੇ ਰਾਜੇ ਸਮੁੱਚੀਆਂ ਜਮੀਨਾਂ ਦਾ ਮਾਲਕ ਬਣ ਬੈਠੇ। ਇਹਨਾਂ ਢੰਗ-ਤਰੀਕਿਆਂ ਨਾ਼ਲ ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਹੋਂਦ ਵਿਚ ਲਿਆਂਦੀ। ਜੋ ਆਮ ਬੋਲਚਾਲ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ "ਬਿਸਵੇਦਾਰੀ" ਕਹਾਉਂਦੀ ਸੀ।

ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਢਾਂਚੇ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਭੱਦੀ ਮਿਸਾਲ ਪਿੰਡ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ (ਮਾਨਸਾ) ਦੀ ਹੈ। ਢਿਲੋਂ, ਧਾਲੀਵਾਲ, ਚਹਿਲ ਕਬੀਲੇ ਹੱਡ-ਭੰਨਵੀਂ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਬੰਜਰ, ਬੇ-ਆਬਾਦ ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਵਾਹੀਯੋਗ ਬਣਾ ਕੇ ਖੇਤੀ ਕਰਨ ਲਗੇ। ਸੱਦਾ ਸਿੰਘ ਜਿਸਦੀ ਭੈਣ ਰਾਜੇ ਨਾਲ ਵਿਆਹੀ ਹੋਈ ਸੀ, ਰਾਹੀਂ ਮਾਲੀਆ ਸਰਕਾਰੀ ਖਜ਼ਾਨੇ ਵਿਚ ਜਮ੍ਹਾਂ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਸੱਦਾ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਚੜ੍ਹਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਸ਼ਾਹੀ ਦਰਬਾਰ ਦੇ ਅਫਸਰਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲਕੇ ਸਾਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਆਪਣੇ ਨਾਂ ਕਰਵਾਈ ਤੇ ਬਟਾਈ ਲੈਣ ਲਗਾ। ਅਗੇ ਚਲਕੇ ਸਾਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਉਸਦੇ ਪੁੱਤਰ ਧਿਆਨ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਮ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਦੁਖੀ, ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨ ਤੇ ਧੋਖੇ ਨਾਲ ਜ਼ਮੀਨ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਕੀਤੇ ਗਏ ਕਿਸਾਨ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਅਫਸਰ ਪੋਪਹਿਮ ਜੰਗ ਜੋ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਦਾ ਇੰਚਾਰਜ ਸੀ ਨੂੰ ਮਿਲੇ। ਉਸਨੇ ਵਿਚਕਾਰਲਾ ਰਾਹ ਕਢਦੇ ਹੋਏ ਜਗੀਰਦਾਰ ਨੂੰ ਮਾਲਕੀ ਹੱਕ ਦਿਤੇ ਤੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਲ ਹੇਠ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਮੌਰੂਸੀ ਹੱਕ ਦਿਤੇ ਗਏ ਤਾਂ ਕਿ ਜਗੀਰਦਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬੇਦਖਲ ਨਾ ਕਰ ਸਕੇ। ਬਟਾਈ ਦੇਣੀ ਲਾਜ਼ਮੀ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਗੈਰ-ਮੌਰੂਸੀ ਜਾਂ ਕੱਚੇ ਮਾਲਕ (ਮੁਜਾਰੇ) ਉਹ ਸਨ ਜੋ ਜਗੀਰਦਾਰ ਤੋਂ ਜ਼ਮੀਨ ਲੈ ਕੇ ਖੇਤੀ ਤਾਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਸਨ, ਪਰ ਮਾਲਕ ਨਹੀਂ, ਕਦੇ ਵੀ ਬੇਦਖਲ ਕੀਤੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਸਨ। ਕਾਨੂੰਨੀ ਤੌਰ ਤੇ ਵਟਾਈ ਕੁਲ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦਾ ਅੱਧ ਸੀ। ਪਰ ਅਮਲੀ ਤੌਰ ਤੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਪੱਲੇ ਇਕ ਮਣ ਵਿਚੋਂ 10 ਸੇਰ ਭਾਵ ਚੌਥਾ ਹਿਸਾ ਹੀ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਵਟਾਈ ਪ੍ਰਥਾ ਨਾਲ ਮੁਜਾਰੇ ਪਿੰਡਾਂ ਦੀ ਤੀਹਰੀ ਗੁਲਾਮੀ ਵਾਲਾ ਨਰਕ ਰੂਪੀ ਜੀਵਨ ਅਰੰਭ ਹੋਇਆ। ਸਭ ਤੋਂ ਉਪਰ ਅੰਗਰੇਜ਼, ਫਿਰ ਰਾਜਾ ਤੇ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਉਸਦੇ ਮਾਲਕ ਸਨ।

ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਸਿਖਿਆ ਤੋਂ ਵੀ ਦੂਰ ਰਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਪਟਿਆਲਾ ਰਿਆਸਤ ਦੇ 784 ਮੁਜਾਰੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕੇਵਲ 4 ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਸਕੂਲ ਭਦੌੜ, ਭਵਾਨੀਗੜ੍ਹ, ਡਸਕਾ ਤੇ ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ ਵਿਖੇ ਸਨ। ਜਿਥੇ ਮੁਖ ਤੌਰ ਤੇ ਬਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਦੇ ਬੱਚੇ ਹੀ ਪੜ੍ਹਦੇ ਸਨ। ਬਾਹਰੋਂ ਆਏ ਕਿਸੇ ਸਾਧ, ਸੰਤ ਨੂੰ ਵੀ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਪਛੜੇ ਰਖਣ ਦੇ ਯਤਨ ਇਥੋਂ ਤਕ ਸਨ ਕਿ ਪਿੰਡਾਂ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਮੁਜਾਰਾ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਉਸਾਰਨ ਦੀ ਵੀ ਆਗਿਆ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਤਾਂ ਕਿ ਇਕੱਠੇ ਹੁੰਦੇ ਲੋਕ ਜ਼ੁਲਮੀ ਰਾਜ ਬਾਰੇ ਵਿਚਾਰ-ਚਰਚਾ ਨਾ ਕਰ ਸਕਣ।

ਮੁਜਾਰਾ ਘੋਲ ਦਾ ਅਰੰਭ

ਜ਼ਮੀਨੀ ਮਾਲਕੀ ਦੇ ਹੱਕ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਤਾਂ 1870-80 ਦੇ ਜ਼ਮੀਨੀ ਬੰਦੋਬਸ਼ਤ ਦੌਰਾਨ ਹੀ ਅਰੰਭ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਜਦੋਂ 1902-04 ਦਾ ਪੱਕਾ ਜ਼ਮੀਨੀ ਬੰਦੋਬਸ਼ਤ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਘੋਲ ਨੇ ਹੋਰ ਤੇਜ਼ੀ ਫੜੀ। ਅਰੰਭ ਵਿਚ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਤੇ ਰਾਜੇ ਦੇ ਸਿਆਸੀ ਅਫਸਰਾਂ ਕੋਲ ਲੁੱਟ ਬੰਦ ਕਰਨ ਦੀ ਗੁਹਾਰ ਲਾਈ। ਵੱਖ-ਵੱਖ ਕਮੇਟੀਆਂ, ਜਥੇਬੰਦੀਆਂ ਬਣਾ ਕੇ ਵਿਰੋਧ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਮੁਜਾਰਾ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਵਿਚ ਇਕ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ ਮੰਡਲ ਸ਼ਿਮਲਾ ਜਾ ਕੇ ਵਾਇਸਰਾਏ ਨੂੰ ਵੀ ਮਿਲਿਆ। ਪਰ ਮਾੜੀ-ਮੋਟੀ ਰਾਹਤ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕਿਤੇ ਕੋਈ ਢੋਈ ਨਹੀਂ ਮਿਲੀ। ਜਦੋਂ ਗੁੱਸਾ ਉਬਾਲੇ ਖਾਂਦਾ ਤਾਂ ਮੁਜਾਰੇ ਵਟਾਈ ਦੇਣ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰ ਕਰਦੇ। ਫੇਰ ਖੂਨੀ ਝੜਪਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ। ਹੱਥ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਬਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਤੇ ਉਸਦੇ ਗੰਡਿਆਂ ਦਾ ਹੀ ਉਪਰ ਰਿਹਾ ਕਿਉਂਕਿ ਅਫਸਰਸ਼ਾਹੀ ਤੇ ਪੁਲੀਸ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਦਦਗਾਰ ਬਣਕੇ ਖੜ੍ਹਦੀ। ਖੂਨੀ ਝੜਪਾਂ ਵਿਚ ਘਟੋ ਘਟ ਤਿੰਨ ਦਰਜਨ ਤੋਂ ਵਧ ਮੁਜਾਰੇ ਕਤਲ ਹੋਏ, ਜਿਹਨਾਂ ਵਿੱਚ ਕੁੱਝ ਬੱਚੇ ਤੇ ਔਰਤਾਂ ਵੀ ਸਨ।

ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਕਾਰਨ ਫਸਲ ਦੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਘੱਟ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਸ਼ੱਕ ਕਰਦਾ ਕਿ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਨੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਕੁਝ ਹਿਸਾ ਚੁਰਾ ਲਿਆ ਹੈ। ਸਿਟੇ ਵਜੋਂ "ਠੱਪਾ ਰਸਮ" ਚਾਲੂ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਜਦੋਂ ਫਸਲ ਵੱਢ, ਗਾਹ ਕੇ ਢੇਰ ਦਾ ਰੂਪ ਧਾਰਦੀ ਤਾਂ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਜਾਂ ਉਸਦਾ ਮੁਖਤਿਆਰ ਆ ਕੇ ਥਾਂ-ਥਾਂ ਉਸ ਤੇ ਠੱਪੇ ਲਾ ਦਿੰਦੇ। ਚੁਕਣ ਤਕ ਢੇਰ ਦੀ ਰਾਖੀ ਮੁਜਾਰਾ ਕਰਦਾ। ਮੁਜਾਰੇ ਨੀਯਤ ਤੇ ਸ਼ੱਕ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਲਈ ਬੇਇਜ਼ਤੀ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦੇ।

7 ਜੁਲਾਈ 1927 ਨੂੰ ਮਾਨਸਾ (ਬਠਿੰਡਾ) ਵਿਖੇ ਰਿਆਸਤੀ ਪ੍ਰਜਾ ਮੰਡਲ ਦੀ ਨੀਂਹ ਰੱਖੀ ਗਈ। ਸੇਵਾ ਸਿੰਘ ਠੀਕਰੀਵਾਲਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਤੇ ਭਗਵਾਨ ਸਿੰਘ ਲੌਂਗੋਵਾਲੀਆ ਇਸਦੇ ਮੁਖ ਸਕੱਤਰ ਚੁਣੇ ਗਏ। ਬਾਬਾ ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ ਧਰਮਗੜ੍ਹ, ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ ਅਤੇ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਤਾਮਕੋਟ ਵੀ ਅਹੁਦੇਦਾਰਾਂ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ। ਪਰਜਾ ਮੰਡਲ ਨੇ ਦੋ ਨੁਕਤਿਆਂ ਤੇ ਲੜਾਈ ਕੇਂਦਰਤ ਕੀਤੀ। (ੳ) ਰਾਜਾਸ਼ਾਹੀ ਦਾ ਖਾਤਮਾ, ਜਮਹੂਰੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਦੀ ਬਹਾਲੀ (ਅ) ਵਟਾਈ ਪ੍ਰਥਾ ਖਤਮ ਤੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਪੱਕੇ ਮਾਲਕੀ ਹੱਕ। ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਦੀ ਲੜਾਈ ਨੂੰ ਅਗੇ ਤੋਰਨ ਵਿਚ ਪ੍ਰਜਾ ਮੰਡਲ ਨੇ ਉਘਾ ਰੋਲ ਨਿਭਾਇਆ।

1933-34 ਵਿਚ ਲੰਮੀ ਲੜਾਈ ਮਗਰੋਂ ਰਾਜੇ ਨੇ ਸ਼ਾਹੀ ਫਰਮਾਨ ਜਾਰੀ ਕਰਕੇ "ਠਪਾ ਰਸਮ" ਖਤਮ ਕੀਤੀ, ਬਦਲ ਵਜੋਂ "ਕਨਕੂਤ" ਰਸਮ ਅਰੰਭ ਕੀਤੀ। ਜਗੀਰਦਾਰ, ਸਰਕਾਰੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਤੇ ਮੁਜਾਰੇ ਦਾ ਪ੍ਰਤਿਨਿਧ ਤਿੰਨੇ ਮਿਲਕੇ ਖੜ੍ਹੀ ਫਸਲ ਦੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦੀ ਕੁੱਲ ਮਾਤਰਾ ਤਹਿ ਕਰਕੇ ਵਟਾਈ ਹਿਸਾ ਤਹਿ ਕਰਦੇ। ਇਸਦਾ ਕੋਈ ਲਾਭ ਨਾ ਹੋਇਆ ਮੁਜਾਰੇ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਤਕ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਜਗੀਰਦਾਰ ਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਫਸਰ ਸਰਦਾਰ ਦੀ ਹਵੇਲੀ ਬੈਠਕੇ ਪੈਦਾਵਾਰ ਹੋਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਸੁਣਾ ਕੇ ਵਟਾਈ ਨਿਸਚਿਤ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਰਸਮ ਦਾ ਵੀ ਭਾਰਾ ਵਿਰੋਧ ਹੋਣਾ ਅਰੰਭ ਹੋਇਆ।

ਬਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਨਾਲ ਟੱਕਰਾਂ, ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਤੇ ਨਵੇਂ-ਨਵੇਂ ਕਬਜ਼ੇ ਕਰਨ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਤੇਜ਼ ਹੀ ਹੋਈ ਸੀ ਕਿ 1942 ਚ ਦੂਜੀ ਸੰਸਾਰ ਜੰਗ ਅਰੰਭ ਹੋ ਗਈ। ਨਤੀਜੇ ਵਜੋਂ ਮੁਜਾਰਾ ਲੜਾਈ ਕੁਝ ਮੱਠੀ ਰੱਖੀ ਗਈ। 1947 ਦੇ ਫਸਾਦਾਂ ਨੇ ਲਹਿਰ ਨੂੰ ਫਿਰ ਨਰਮ/ਧੀਮਾ ਕਰ ਦਿਤਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਆਗੂਆਂ ਨੇ ਬੇਗੁਨਾਹਾਂ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ, ਦੰਗੇ ਰੋਕਣ ਤੇ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਨੂੰ ਬਚਾ ਕੇ ਸੁਰਖਿਅਤ ਪਾਕਿ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਵਿਚ ਮਦਦ ਕਰਨ ਨੂੰ ਪਹਿਲੀ ਦਿਤੀ।

1947 ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਉਪਰੰਤ ਦੇਸੀ ਰਿਆਸਤਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਾ ਕੇ ਪਟਿਆਲਾ ਤੇ ਪੰਜਾਬ ਸਟੇਟਸ ਯੂਨੀਅਨ (ਪੈਪਸੂ) ਸੂਬਾ ਬਣਾਇਆ। ਰਾਜ

ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਸੁਤੰਤਰ (ਜਵਾਨੀ ਵੇਲੇ)

ਜੰਗੀਰ ਸਿੰਘ ਜੋਗਾ

ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ

ਸੇਵਾ ਸਿੰਘ ਠੀਕਰੀਵਾਲਾ

ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ

ਡਾ. ਭਾਗ ਸਿੰਘ

ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ ਚਮਕ

ਕਾਮਰੇਡ ਛੱਜੂ ਮੱਲ ਵੈਦ

ਗਵਰਨਰ ਦੀਆਂ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਦੇ ਕੇ ਪਟਿਆਲਾ ਰਾਜੇ ਨੂੰ ਇਸਦਾ "ਰਾਜ ਪ੍ਰਮੁੱਖ" ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ। ਰਾਜੇ ਸੌਖੇ ਨਹੀਂ ਮੰਨੇ ਕੇਂਦਰ ਦੀ ਤਤਕਲੀਨ ਕਾਂਗਰਸ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਢੇਰ ਸਾਰੀਆਂ ਰਿਐਤਾਂ ਤੇ ਖੁਲ੍ਹੇ ਗੱਫੇ ਦੇਣੇ ਪਏ। ਕਾਂਗਰਸ ਦਾ ਜਗੀਰਦਾਰੀ ਨਾਲ ਸਮਝੋਤਾ ਕਰੂ ਚਰਿੱਤਰ ਸਪਸ਼ਟ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਗਟ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਤਾਕਤਾਂ ਦਾ ਕੌਮਾਂਤਰੀ ਸੰਤੁਲਨ ਬਦਲ ਗਿਆ। ਮਜ਼ਬੂਤ ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਦੇਸ ਦਾ ਧੜਾ ਹੋਂਦ ਵਿਚ ਆਉਣ ਨਾਲ ਮੁਜਾਰਾ ਲਹਿਰ ਵਿਚ ਅੰਤਾਂ ਦਾ ਉਤਸ਼ਾਹ ਤੇ ਜੋਸ਼ ਠਾਠਾਂ ਮਾਰਨ ਲੱਗਾ।

ਹਥਿਆਰਬੰਦ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੀ ਰੂਪ-ਰੇਖਾ

ਕਾਮਰੇਡ ਛੱਜੂ ਮੱਲ ਵੈਦ ਦੀ ਲਿਖਤ ਅਨੁਸਾਰ ਕਾਮਰੇਡ ਸੁਤੰਤਰ, ਫੱਕਰ, ਜੋਗਾ ਅਤੇ ਵੈਦ ਜੀ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਵਿਚ ਮੁਜਾਰਾ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਅਹਿਮ ਮੀਟਿੰਗ ਪਿੰਡ ਜਵਾਹਰ ਸਿੰਘ ਵਾਲਾ ਵਿਖੇ ਕਰਕੇ ਹੇਠ ਲਿਖੀ ਯੁੱਧਨੀਤੀ ਤਹਿ ਕੀਤੀ ਗਈ।

(1) ਬਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਗੁੰਡਿਆਂ ਦਾ ਟਾਕਰਾ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਜਾਏ। ਖੇਤਾਂ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਕੋਈ ਟੱਕਰ ਨਹੀਂ।

(2) ਨੌਕਰਸ਼ਾਹਾਂ, ਮਹਿਕਮਾ ਮਾਲ ਤੇ ਪੁਲੀਸ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨਾਲ ਟੱਕਰ ਲੈਣ ਤੋਂ ਬਚਿਆ ਜਾਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਰੁਧ ਕੋਈ ਹਥਿਆਰਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਹੀਂ। ਹਾਂ ਸਮਾਜੀ ਬਾਈਕਾਟ, ਨਾ ਚਾਹ ਨਾ ਰੋਟੀ, ਪੂਰਾ ਨਾ ਮਿਲਵਰਤਣ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਨਾ ਕਰੋ ਸਗੋਂ ਅਗੇ-ਪਿਛੇ ਹੋ ਕੇ, ਆਂਬੇ-ਲਾਂਬੇ ਆਸਰਾ ਲਵੋ ਸਮਾਂ ਬਤਾਓ।

(3) ਦੁਸ਼ਮਣ ਨੂੰ ਹਮਲਾ ਕਰਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦੇ ਕੇ ਆਪ ਬਚਾਓ ਲਈ ਲੜਨਾ ਗਲਤ ਹੈ। ਪਹਿਲ ਸਦਾ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਰਖੋ। ਪਹਿਲਕਦਮੀ, ਪਹਿਲਾਂ ਹਮਲਾ ਬਚਾਓ ਦੀ ਪੱਕੀ ਗਰੰਟੀ ਹੈ।

ਕਾਮਰੇਡ ਸੁਤੰਤਰ ਨੇ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਹਥਿਆਰ ਇਕੱਠੇ ਕਰਨ, ਖੋਹਣ, ਖਰੀਦਣ, ਵਲੰਟੀਅਰ ਭਰਤੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹਥਿਆਰਬੰਦੀ ਦੀ ਸਿਖਲਾਈ, ਗੁਰੀਲਾ ਦਸਤੇ ਬਣਾਉਣ ਤੇ ਘੋਲ ਵਿਚ ਪਹਿਲਕਦਮੀ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਰਖਣ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿਤਾ। ਵਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਦੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਉਪਰ ਕਬਜ਼ੇ ਕਰਨ ਤੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਵਿਚ ਵੰਡਣ ਦੀ ਮੁਹਿੰਮ ਤੇਜ਼ ਹੋਈ। 200 ਤੋਂ ਵੱਧ ਪਿੰਡਾਂ ਦੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਨੇ ਜਮੀਨਾਂ ਤੇ ਕਬਜ਼ੇ ਕਰ ਲਏ। ਬਾਬਾ ਹਰਨਾਮ ਸਿੰਘ ਧਰਮਗੜ੍ਹ ਕਬਜ਼ਾਕਰੂ ਜਥਿਆਂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਜਮੀਨਾਂ ਤੇ ਕਬਜ਼ੇ ਕਰਕੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡ ਦਿੰਦੇ। ਬਾਬਾ ਜੀ ਗਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਇਹ ਵੀ ਗਾਉਂਦੇ ਸਨ ਕਿ :

"ਤੇਰੀ ਜਾਉਗੀ ਗਰੀਬੀ ਸ਼ੇਰਾ, ਰਾਜਿਆਂ ਦੇ ਰਾਜ ਜਾਣਗੇ।"
"ਉਠ ਕਰ ਲੈ ਜ਼ਮੀਨ ਉਤੇ ਕਬਜ਼ਾ, ਵਿਸਵੇਦਾਰ ਭੱਜ ਜਾਣਗੇ।"

"ਕਨਕੂਤ" ਰਸਮ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਕਰਕੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਪਟਿਆਲਾ ਨੇ ਇਸ ਰਸਮ ਉਪਰ ਅਮਲ ਕੀਤਾ ਕਿ "ਸਾਰਾ ਧੰਨ ਜਾਤਾ ਦੇਖੀਏ, ਆਧਾ ਦੀਜੇ ਬਾਂਟ।" ਇਹ ਸ਼ਾਹੀ ਫੁਰਮਾਨ 11 ਮਾਰਚ 1947 ਦੇ ਗਜਟ ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਅਨੁਸਾਰ, ਮੌਰੂਸੀ ਮੁਜਾਰੇ ਆਪਣੇ ਹਲ ਹੇਠ ਜ਼ਮੀਨ ਦਾ ਤੀਜਾ ਹਿੱਸਾ ਵਿਸਵੇਦਾਰ ਨੂੰ ਦੇ ਕੇ ਬਾਕੀ ਦੋ ਹਿੱਸਿਆਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਪੂਰੇ ਮਾਲਕ ਬਣ ਸਕਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਵਿਚ ਕਈ ਹੋਰ ਸ਼ਰਤਾਂ ਮੁਜਾਰਾ ਵਿਰੋਧੀ ਸੀ ਅਤੇ ਮੁਜਾਰਾ ਆਗੂਆਂ ਨੇ ਅਪਰੈਲ 1947 ਨੂੰ ਪਿੰਡ ਖੜਕ ਸਿੰਘ ਵਾਲਾ ਵਿਖੇ ਮੀਟਿੰਗ ਕਰਕੇ ਸ਼ਾਹੀ ਫੁਰਮਾਨ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ।

ਪਿੰਡ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਦੀ ਘਟਨਾ

ਪਿੰਡ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਦੇ ਦੋ ਵਿਸਵੇਦਾਰ ਭਗਵਾਨ ਸਿੰਘ ਤੇ ਸਿਆਸਤ ਸਿੰਘ ਮਹਾਰਾਜਾ ਦੇ ਸਮੇਂ ਉਸਦੇ ਸੁਪਰਡੈਂਟ ਪੁਲੀਸ ਸਨ। ਸਿਆਸਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਅਕਤੂਬਰ 1948 ਵਿਚ ਤਹਿਸੀਲਦਾਰ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਵਿਚ ਸਟਾਫ ਤੇ ਪੁਲੀਸ ਭੇਜੀ ਤਾਂ ਕਿ ਸ਼ਾਹੀ ਫੁਰਮਾਨ ਅਨੁਸਾਰ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਵੰਡ ਕੀਤੀ ਜਾਏ। ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਮਦ ਬਾਰੇ ਪਹਿਲਾਂ ਪਤਾ ਲਗ ਗਿਆ ਸੀ। ਮੁਜਾਰੇ ਬਰੇਟਾ ਤੋਂ ਆਉਂਦੇ ਰਾਹ ਤੇ ਇਕੱਠੇ ਹੋਏ। ਸਟਾਫ ਨੂੰ ਆਉਂਦੇ ਵੇਖ ਕੇ ਨਾਹਰੇ ਗੂੰਜ ਉਠੇ : "ਚਾਲੂ ਰਹੇ ਮੁਜਾਰਿਆ ਲੜਾਈ-ਨਾ ਖੁੱਡ ਜ਼ਮੀਨ ਨਾ ਦਾਣਾ ਬਟਾਈ"। "ਵਿਸਵੇਦਾਰੀ ਬਿਨਾਂ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਖਤਮ ਕਰੋ।" ਇਕੱਠ ਦਾ ਜੋਸ਼, ਗੁੱਸਾ ਤੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿਚ ਰਵਾਇਤੀ ਹਥਿਆਰ ਵੇਖ ਕੇ ਸਟਾਫ ਦੀ ਅਗੇ ਵੱਧਣ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਨਹੀਂ ਪਈ।ਉਹ ਉਥੋਂ ਵਾਪਸ ਬਰੇਟਾ ਥਾਣੇ ਨੂੰ ਮੁੜ ਗਏ।

ਸਟਾਫ ਦੀ ਅਸਫਲਤਾ ਕਾਰਨ ਵਿਸਵੇਦਾਰ ਤੇ ਪੁਲੀਸ ਅਫਸਰ ਬਹੁਤ ਬੁਖਲਾਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਾਨੂੰਨ ਹੱਥ ਵਿਚ ਲੈਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ। ਭਾੜੇ ਉਪਰ ਗੁੰਡੇ ਇਕੱਠੇ ਕੀਤੇ। ਦਸੰਬਰ 1948 ਨੂੰ ਇਕ ਥਾਂ ਇਕੱਠੇ ਕਰਕੇ ਮਾਸ, ਸ਼ਰਾਬ ਨਾ਼ਲ ਰਜਾਇਆ, ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਪਿੰਡ ਭਿਜਵਾਇਆ ਤਾਂ ਕਿ ਉਹ ਜ਼ਮੀਨ ਉਪਰ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰਨ। ਚੋਖੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਪੁਲੀਸ ਵੀ ਨਾਲ ਸੀ। ਉਕਤ ਟੋਲੇ ਨੇ ਪਿੰਡ ਦੀ ਵਜਾਏ ਸਿਧਾ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਜਾ ਕੇ, ਕੈਂਪ ਲਗਾਇਆ। ਛੱਜੂਮਲ ਵੈਦ ਤੇ ਫੱਕਰ ਨੇ ਕੁਝ ਪਿੰਡਾਂ ਦਾ ਦੌਰਾ ਕਰਕੇ ਤੇ ਕੁੱਝ ਨੂੰ ਰੁੱਕੇ ਭੇਜਕੇ ਕਿਸ਼ਨਗੜ੍ਹ ਪੁੱਜਣ ਦੇ ਸੁਨੇਹੇ ਭੇਜੇ, ਦੋ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਗੁਆਂਢੀ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚੋਂ 5000 ਮੁਜਾਰੇ ਕਿਸਾਨ ਪਿੰਡ ਇਕੱਠੇ ਹੋਏ। ਰਵਾਇਤੀ ਤੇ ਕੁਝ ਪਕੇ ਹਥਿਆਰਾਂ ਨਾਲ ਗੁੰਡਿਆਂ ਦੇ ਕੈਂਪ ਵਲ ਚਾਲੇ ਪਾ ਦਿਤੇ, ਦੋਹਾਂ ਪਾਸਿਆਂ ਤੋਂ ਗੋਲੀਆਂ ਵੀ ਚਲੀਆਂ ਪੁਲੀਸ ਭੱਜ ਗਈ, ਗੁੰਡੇ ਘੇਰਾ ਪੈਣ ਤੇ ਡਰਦੇ ਗੰਨੇ ਦੇ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਜਾ ਛੁੱਪੇ। ਗੁੱਸੇ ਵਿੱਚ ਆਏ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਗੰਨੇ ਦੇ ਖੇਤ ਨੂੰ ਅੱਗ ਲਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ, ਸਿਆਣੇ ਆਗੂਆਂ ਨੇ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਤੋਂ ਰੋਕਿਆ ਤੇ ਗੰਨਾਂ ਵੱਢ ਕੇ ਗੁੜ ਬਣਾਉਣ ਦੀ ਸਲਾਹ ਦਿਤੀ।ਇਕੱਠ ਨੂੰ ਗਰੁੱਪਾਂ ਵਿਚ ਵੰਡ ਕੇ ਗੰਨਾ ਕੱਟਣ-ਵੱਢਣ, ਢੋਆ-ਢੁਆਈ ਕਰਨ ਤੇ ਗੁੜ ਬਣਾਉਣ ਦੀ ਡਿਊਟੀ ਲਾਈ। ਗੁਆਂਢੀ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚੋਂ ਵੇਲਣੇ ਮੰਗਵਾਏ। 84 ਕਿਲੇ ਗੰਨੇ ਦੀ ਫਸਲ ਕੱਟ-ਵੱਢ ਕੇ ਗੁੜ ਬਣਾ ਕੇ ਸੰਬੰਧਤ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਦੇ ਘਰਾਂ ਵਿਚ ਪੁੱਜਦਾ ਕਰ ਦਿਤਾ।

ਇਸ ਘਟਨਾ ਸੰਬੰਧੀ 36 ਨੌਜਵਾਨ ਮੁਜਾਰੇ ਦੋਸ਼ੀ ਨਾਮਜ਼ਦ ਕਰਕੇ ਸਿਆਸਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਵਰੰਟ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰੀ ਜਾਰੀ ਕਰ ਦਿਤੇ। ਲਗਭਗ 100 ਪੁਲੀਸ ਅਫਸਰ ਤੇ ਸਿਪਾਹੀਆਂ ਨੇ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰੀਆਂ ਲਈ 16 ਮਾਰਚ 1949 ਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਹੀ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਘੇਰ ਲਿਆ। ਹਥਿਆਰਬੰਦ ਵਲੰਟੀਅਰਾਂ ਨਾਲ ਟੱਕਰ ਵਿਚ ਪੁਲੀਸ ਦੇ ਕਈ ਘੋੜੇ ਜ਼ਖਮੀ ਹੋਏ, ਜ਼ਖਮੀ ਘੋੜੇ ਤੋਂ ਡਿਗ ਕੇ ਇਕ ਪੁਲੀਸ ਇੰਸਪੈਕਟਰ ਮਰ ਗਿਆ। ਘਬਰਾਈ ਪੁਲੀਸ ਮੁੜਦੇ ਪੈਰੀਂ ਨੱਠ ਗਈ।

ਵੱਡੀ ਲੀਡਰਸ਼ਿਪ ਗੁਆਂਢੀ ਪਿੰਡ ਗੋਬਿੰਦਗੜ੍ਹ ਵਿਖੇ ਇਕੱਠੀ ਹੋਈ। ਅਹਿਸਾਸ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ ਕਿ ਹੁਣ ਵੱਡਾ ਹਮਲਾ ਹੋਵੇਗਾ, ਫੌਜ ਵੀ ਆ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਛੱਜੂ ਮੱਲ ਵੈਦ ਨੇ ਇਕ ਰੁਕਾ ਭੇਜਕੇ ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ ਨੂੰ ਉਥੇ ਆਉਣ ਲਈ ਕਿਹਾ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਾਪਸੀ ਰੁਕੇ ਰਾਹੀਂ ਆਉਣ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਲੋਕਾਂ ਤੇ ਅਕਿਹ ਤੇ ਅਸਿਹ ਜ਼ਬਰ-ਜ਼ੁਲਮ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਹੈ।
18 ਮਾਰਚ ਸਵੇਰ ਨੂੰ 400 ਫੌਜੀ, 11 ਟੈਂਕ, 5 ਹਥਿਆਰਬੰਦ ਕਾਰਾਂ ਤੇ ਟਰੱਕ, ਸੌ ਦੇ ਕਰੀਬ ਪੁਲਸੀਆਂ ਨੇ ਸਵੇਰ ਨੂੰ ਹੀ ਪਿੰਡ ਘੇਰ ਲਿਆ। ਮਾਰਸ਼ਲ ਲਾਅ ਲਾਗੂ ਕਰ ਦਿਤਾ। ਲਾਊਡ ਸਪੀਕਰ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਦੀ ਹਵੇਲੀ/ਕੋਠੀ ਇਕੱਠੇ ਹੋਣ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਗਿਆ। ਘਰ-ਘਰ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ੀ ਲਈ ਗਈ। ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਬਾਗੀ ਤੇ ਸਮੇਤ ਦੋ ਹੋਰ ਸਾਥੀ ਇਕ ਘਰ ਵਿਚ ਸਨ। ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਆਏ। ਪੁਲੀਸ ਨੇ ਵੇਖਦੇ ਹੀ ਗੋਲੀ ਚਲਾਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਾਰ ਦਿਤਾ। ਮੇਜਰ ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਫੌਜ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ।

ਲਾਈਨ ਵਿਚ ਖੜ੍ਹਾ ਕਰਕੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ ਬਣਾਈ ਗਈ। ਜਦੋਂ ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ ਨੇ ਆਪਣਾ ਨਾਂ ਦਸਿਆ ਤਾਂ ਨਾਲ ਖੜ੍ਹੇ ਡੀਸੀ ਨੇ ਗੋਲੀ ਮਾਰਨ ਲਈ ਕਿਹਾ। ਫੌਜੀ ਕਮਾਂਡਰ ਨੇ ਦਖਲ ਦਿੰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ 10 ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਤਾਂ ਫੜ ਕੇ ਮਾਰ ਨਹੀਂ ਸਕੇ, ਹੁਣ ਕਿਉਂ? ਚੰਗੇ ਫੌਜੀ ਅਫਸਰ ਕਰਕੇ ਫੱਕਰ ਜੀ ਦੀ ਜਾਨ ਬਚ ਗਈ। ਪਰ ਅੰਨ੍ਹਾ ਅਣਮਨੁੱਖੀ ਤਸ਼ੱਦਦ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਜਿਸਨੂੰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਰਾਹੀਂ ਬਿਆਨ ਕਰਨਾ ਅਸੰਭਵ ਹੈ। ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਵੜਨ ਦੀ ਮਨਾਹੀ ਕਰ ਦਿਤੀ। ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ ਸਮੇਤ 85 ਕਿਸਾਨ ਮੁਜਾਰੇ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰ ਕਰਕੇ ਫਰੀਦਕੋਟ ਜੇਲ੍ਹ ਭੇਜੇ ਗਏ। ਦਫਾ 302/395/365/307/142/120/19 ਦੇ ਪਰਚੇ ਦਰਜ ਕਰਕੇ ਮੁਕੱਦਮੇ ਚਲਾਏ। ਜੰਗੀਰ ਸਿੰਘ ਜੋਗਾ ਜੀ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਹੇਠ "ਡਿਫੈਂਸ ਕਮੇਟੀ" ਬਣਾ ਕੇ ਕੇਸ ਲੜਿਆ ਗਿਆ। ਲਹਿਰ ਦੇ ਦਬਾਅ ਸਦਕਾ ਕੋਈ ਗਵਾਹ ਸਾਹਮਣੇ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਮਾਨਸਾ ਦੇ ਨਾਮੀ ਵਕੀਲ ਤੇ ਪ੍ਰਜਾ ਮੰਡਲੀਏ ਬਾਬੂ ਦੇਸ ਰਾਜ ਨੇ ਮੁਫਤ ਮੁਕੱਦਮਾ ਲੜਿਆ। ਦਸੰਬਰ 1950 ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਮੁਲਜ਼ਮ ਬਾ-ਇੱਜ਼ਤ ਬਰੀ ਹੋ ਗਏ। ਅਕਤੂਬਰ 1948 ਤੋਂ 1951 ਦੇ ਢਾਈ ਸਾਲਾਂ ਦੇ ਅਰਸੇ ਦੌਰਾਨ ਪੈਪਸੂ ਦੀਆਂ ਚਾਰ ਵਜ਼ਾਰਤਾਂ ਬਣੀਆਂ। ਪਾਸਕੂ ਤਿੰਨ ਕਮਿਊਨਿਸਟਾਂ ਕੋਲ ਸੀ। ਨਾ-ਮਾਤਰ ਮੁਆਵਜ਼ੇ ਨਾਲ ਵਿਸਵੇਦਾਰੀ ਖਾਤਮੇ ਦਾ ਕਮੀਆਂ-ਕਮਜ਼ੋਰੀਆਂ ਵਾਲਾ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਉਣ ਵਿਚ ਸਫਲਤਾ ਜ਼ਰੂਰ ਮਿਲੀ।

29 ਮਈ 1952 ਨੂੰ ਮਾਨਸਾ ਮੰਡੀ (ਬਠਿੰਡਾ) ਵਿਖੇ ਜੰਗੀਰ ਸਿੰਘ ਜੋਗਾ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਥਲੇ ਕਿਸਾਨ ਮੁਜਾਰਾ ਕਾਨਫਰੰਸ ਹੋਈ। ਪੈਪਸੂ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਮੰਤਰੀ ਦਾਰਾ ਸਿੰਘ ਤੇ ਇੰਦਰ ਸਿੰਘ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ। ਡੀਸੀ ਪ੍ਰੇਮ ਕੁਮਾਰ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਸੀ। 24 ਪਿੰਡਾਂ ਦੇ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਆਪਣੇ ਹਲਕੇ ਦੇ ਪਟਵਾਰੀਆਂ ਸਮੇਤ ਸਟੇਜ ਤੇ ਹਾਜ਼ਰ ਹੋਏ। ਆਪਣੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਮਾਲਕੀ ਛੱਡਕੇ ਇੰਤਕਾਲ ਆਪਣੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਂ ਦਰਜ ਕਰਵਾ ਦਿਤੇ। ਗੋਬਿੰਦਪੁਰਾ ਦੇ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਨੇ 500 ਕਿਲੇ, ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ ਦੇ 7 ਬਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਨੂੰ 2456 ਕਿਲੇ, ਇਕ ਹੋਰ ਵਿਸਵਦਾਰ ਸਮਸ਼ੇਰ ਸਿੰਘ 3000 ਕਿਲੇ, ਪਟਿਆਲਾ ਸ਼ਹਿਰ ਵਸਦੇ ਇਕ ਬਿਸਵੇਦਾਰ ਨੇ 24000 ਕਿਲੇ, ਰਾਜਾ ਨਿਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਨੇ 5000 ਕਿਲੇ ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਮ ਕੀਤੇ। ਇਹ ਲੜੀ ਬਹੁਤ ਲੰਮੀ ਹੈ। ਹਥਿਆਰਬੰਧ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੌਰਾਨ ਹੀ ਲਹਿਰ ਦੇ ਮੁੱਖ ਆਗੂ ਕਾਮਰੇਡ ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਸੁਤੰਤਰ ਦੇ ਇੱਕ ਲੱਖ ਦੇ ਇਨਾਮ ਵਾਲੇ ਵਾਰੰਟ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰੀ ਜਾਰੀ ਹੋ ਚੁੱਕੇ ਸਨ। ਉਹ ਲਗਭਗ 16 ਸਾਲ ਗੁਪਤਵਾਸ ਰਹੇ ਪਰ ਪੁਲਿਸ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰ ਨਾ ਕਰ ਸਕੀ। 1963 ਦੇ ਆਰੰਭ ਵਿੱਚ ਬਾਬਾ ਸੋਹਣ ਸਿੰਘ ਭਕਨਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਹੇਠ ਗਦਰੀ ਬਾਬਿਆਂ ਦਾ ਇਕ ਪ੍ਰਤੀਨਿੱਧ ਮੰਡਲ ਤਤਕਲੀਨ ਪ੍ਰਧਾਨਮੰਤਰੀ ਜਵਾਰਲਾਲ ਨਹਿਰੂ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਤੇ ਸੁਤੰਤਰ ਜੀ ਦੇ ਵਾਰੰਟ ਮਨਸੁੱਖ ਕਰਨ ਲਈ ਜ਼ੋਰ ਦਿਤਾ। ਨਹਿਰੂ ਨੇ ਬਾਬਿਆਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਬੇਨਤੀ ਪ੍ਰਵਾਨ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਤਤਕਲੀਨ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਕੈਰੋਂ ਨੂੰ ਵਾਰੰਟ/ਮੁਕੱਦਮਾ ਵਾਪਿਸ ਲੈਣ ਦੀ ਹਦਾਇਤ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਜਾਕੇ ਉਹ ਖੁੱਲੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਪਰਤੇ।

ਮੁਜਾਰਾ ਲਹਿਰ ਦਾ ਸਾਰ-ਤੱਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਬਹੁਤ ਘਟ ਜਾਨੀ ਨੁਕਸਾਨ ਨਾਲ 16 ਲੱਖ ਤੋਂ ਉਪਰ ਕਿਲੇ ਬਿਸਵੇਦਾਰਾਂ ਤੋਂ ਖੋਹਕੇ, ਮੁਜਾਰਿਆਂ ਵਿਚ ਵੰਡ ਕੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਮਾਲਕ ਬਣਾਇਆ। ਪਹਿਲਾਂ ਬੰਦਾ ਸਿੰਘ ਬਹਾਦਰ ਨੇ ਹਲਵਾਹਕਾਂ ਵਿਚ ਜ਼ਮੀਨ ਵੰਡੀ ਸੀ, ਦੂਸਰਾ ਮੁਜਾਰਾ ਲਹਿਰ ਨੇ। ਅੱਜ ਫਿਰ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਖੋਹਣ, ਕਾਰਪੋਰੇਟਾਂ ਨੂੰ ਦੇਣ ਲਈ ਕਾਲੇ ਕਾਨੂੰਨ ਥੋਪ ਦਿਤੇ ਹਨ। ਕਿਸਾਨ ਆਮ ਜਨਤਾ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਹੋਂਦ ਲੜਾਈ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬਾਰਡਰਾਂ ਆਦਿ ਤੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਵਿਚ ਹੈ। ਮੁਜਾਰਾ ਲਹਿਰ ਦਾ ਸ਼ਾਨਾਮੱਤੀ ਵਿਰਸਾ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਣ ਨੂੰ ਹੋਰ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨਾਲ ਲੜਨ ਦਾ ਹੌਸਲਾ ਤੇ ਸ਼ਕਤੀ ਦੇਵੇਗਾ। ਮੌਜੂਦਾ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਹੋਰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕਰਨਾ ਤੇ ਜਿੱਤ ਤੱਕ ਅਗੇ ਵਧਣਾ 19 ਮਾਰਚ ਦੇ ਪੈਪਸੂ ਮੁਜਾਰਾ ਲਹਿਰ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਸੱਚੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜ਼ਲੀ ਹੋਵੇਗੀ।

ਇਸ ਮੈਦਾਨੇ ਆਉਣੋ ਪਹਿਲਾਂ ਲੱਖ ਵਾਰ ਕੋਈ ਸੋਚ ਦੁੜਾਵੇ।
ਡੂੰਘੇ ਸਾਗਰ ਠਲਣੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਗਰਜ਼ ਗਠੜੀਆਂ ਸੁੱਟ ਵਗਾਵੇ
ਗ਼ਰਜ਼ੀ ਆਗੂ ਆਪ ਡਬੋਂਦਾ, ਜਿਉਂ ਬਾਹਮਣ ਜਜਮਾਨ ਡੁਬਾਵੇ
ਫ਼ੱਕਰ ਗ਼ਾਜ਼ੀ ਤੋਂ ਬਣ ਪਾਜੀ, ਜਨਣੀ ਦੁਧ ਨੂੰ ਲਾਜ ਨਾ ਲਾਵੇ।

ਕਾਮਰੇਡ ਧਰਮ ਸਿੰਘ ਫੱਕਰ

ਮਨੁੱਖਤਾ ਪੂਜੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਸਤਕਾਰੇ ਜਾਂਦੇ ਬੰਦੇ ਨੇ।
ਵੰਡ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਮੁੱਕੀ ਹੈ, ਏਥੇ ਮਿਲਦੇ ਸਭ ਨੂੰ ਧੰਦੇ ਨੇ।
ਕੋਈ ਭੇਦ ਨਾ ਕਾਲੇ ਗੋਰੇ ਦਾ, ਤੇ ਨਾ ਕੋਈ ਮਾੜੇ ਚੰਗੇ ਨੇ।
ਜਿਉਂ ਇਕੋ ਮਾਂ ਦੇ ਜਾਏ ਨੇ ਉਂਜ ਭਾਵੇਂ ਰੰਗ ਬਰੰਗੇ ਨੇ।
ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਕੁੱਖੋਂ ਜਾਇਆ ਹੈ, ਇਹ ਨਵਾਂ ਅਲੌਕਿਕ ਰਸ਼ੀਆ
ਦੁਨੀਆ ਦਾ ਰਾਹ ਰੁਸ਼ਨਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਹੱਥ ਦੀਪ ਹਥੌੜਾ ਹੱਸੀਆਂ।

ਕਾ. ਛੱਜੂ ਮੱਲ ਵੈਦ